

साप्ताहिक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

संपादक : आकाश कुशवाह:- 8435500216 वर्ष-1 अंक-09 | ग्वालियर, सोमवार 19 अक्टूबर 2026 | पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपया RNI No. - MPHIN/26/A/7091

सत्ता का घमंड ले डूबेगा या संवाद की मर्यादा बचाएगी साख? इंदौर की घटना ने खड़े किए सवाल

मुख्यमंत्री का पत्रकारों से बिना बातचीत किए लौटना चर्चा में; माइक की होड़ पर भी उठे सवाल, आखिर लोकतंत्र में संवाद की जगह कहां है?

अचलेश्वर एक्सप्रेस

इंदौर। सत्ता के गलियारों में एक दृश्य कभी-कभी सैकड़ों भाषणों से ज्यादा सवाल खड़े कर देता है। इंदौर की रेसीडेंसी कोठी में 17 अक्टूबर को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के पत्रकारों से बातचीत किए बिना लौटने की खबर ने ऐसा ही एक सवाल खड़ा किया है। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, मुख्यमंत्री के सामने एक साथ बड़ी संख्या में माइक और चैनलों की पहचान पट्टिकाएं आगे किए जाने से अव्यवस्था बनी। बताया गया कि इस स्थिति में मुख्यमंत्री असहज हुए और बिना बातचीत किए वहां से रवाना हो गए। इस घटनाक्रम को केवल नाराजगी या सत्ता के अहंकार का नाम देना जल्दबाजी होगी, लेकिन इसके भीतर छिपे लोकतांत्रिक सवालों को नजरअंदाज करना भी उचित नहीं है।

क्या सत्ता सवालों से बड़ी हो सकती है?

मुख्यमंत्री किसी राजनीतिक दल के ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश के प्रशासनिक नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके हर सार्वजनिक कदम को लोग केवल एक व्यक्ति के व्यवहार के रूप में नहीं, बल्कि शासन की कार्यशैली के संकेत के रूप में भी देखते हैं। पत्रकारों से बातचीत करना किसी मुख्यमंत्री पर हर परिस्थिति में जवाब देने की बाध्यता का सरल मामला नहीं है, लेकिन सार्वजनिक मुद्दों पर संवाद बनाए रखना लोकतांत्रिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण आवश्यकता जरूर है। यदि किसी कार्यक्रम में अव्यवस्था हो, माइक एक-दूसरे से टकरा रहे हों और सवाल पूछने की प्रक्रिया अनुशासनहीन हो जाए, तो ऐसी स्थिति को व्यवस्थित करने की जिम्मेदारी आयोजकों और मीडिया प्रतिनिधियों, दोनों की बनती है। लेकिन सवाल यह भी है कि क्या इस अव्यवस्था के कारण संवाद का पूरा अवसर ही समाप्त हो जाना चाहिए? क्या बेहतर विकल्प यह नहीं था कि पत्रकारों को व्यवस्थित करके बातचीत की जाती और जनता तक जरूरी जानकारी पहुंचाई जाती?



पत्रकारिता की मर्यादा भी जरूरी, लेकिन सवाल पूछने का अधिकार भी

इस घटनाक्रम का दूसरा पहलू मीडिया की कार्यशैली है। आज चैनलों, डिजिटल पोर्टलों और स्वतंत्र पत्रकारों के बीच सबसे पहले दृश्य हासिल करने की प्रतिस्पर्धा कई बार ऐसी स्थिति पैदा कर देती है, जहां सवाल पीछे छूट जाते हैं और माइक आगे निकल जाते हैं। पत्रकारिता का उद्देश्य किसी नेता के चेहरे के सबसे करीब अपना माइक पहुंचाना नहीं, बल्कि जनता के सवालों को जिम्मेदारी से सामने रखना है। लेकिन इस आलोचना की आड़ में पत्रकारों के सवाल पूछने के अधिकार को कमजोर नहीं किया जा सकता। मीडिया से अनुशासन की अपेक्षा करने वाले सत्ता के प्रतिनिधियों से भी उतनी ही अपेक्षा होती है कि वे असहज सवालों और कठिन परिस्थितियों में संयम बनाए रखें। लोकतंत्र में न पत्रकारिता को अपनी मर्यादा भूलनी चाहिए और न सत्ता को अपनी जवाबदेही।

सत्ता का घमंड ले डूबेगा, अगर संवाद के दरवाजे बंद हुए

सत्ता का वास्तविक प्रभाव उसके पद, काफिले और सुरक्षा व्यवस्था से नहीं, बल्कि जनता के प्रति उसकी जवाबदेही से तय होता है। मुख्यमंत्री के पास प्रशासनिक शक्ति है, लेकिन उस शक्ति की विश्वसनीयता तभी मजबूत होती है, जब जनता को यह भरोसा रहे कि उसकी समस्याओं और सवालों के लिए संवाद के रास्ते खुले हैं। यहां यह स्पष्ट करना भी जरूरी है कि उपलब्ध रिपोर्टों से मुख्यमंत्री के व्यवहार के पीछे सत्ता का घमंड होने की पुष्टि नहीं होती। इसलिए किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के बजाय घटना से उठने वाले सवालों पर चर्चा होनी चाहिए। फिर भी, यदि किसी भी सत्ता प्रतिष्ठान में आलोचना या सवालों के प्रति असहजता संवाद को सीमित करने लगे, तो यह लोकतांत्रिक विश्वास के लिए चिंता का विषय होगा।

सवाल मुख्यमंत्री से भी, मीडिया से भी

इंदौर की इस घटना से दोनों पक्षों को सीख लेने की जरूरत है। मुख्यमंत्री और उनकी टीम को सार्वजनिक संवाद के लिए बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि पत्रकारों को सवाल पूछने का उचित अवसर मिल सके। वहीं मीडिया को भीड़ और माइक की प्रतिस्पर्धा से ऊपर उठकर सवालों की गुणवत्ता, अनुशासन और पेशेवर मर्यादा पर ध्यान देना चाहिए।जनता को नेताओं के भाषण ही नहीं, उनके जवाब भी सुनने का अधिकार है। पत्रकार उन सवालों को सामने लाने का माध्यम हैं। इसलिए किसी भी घटनाक्रम में यह सुनिश्चित होना चाहिए कि व्यवस्था की कमी के कारण जनहित के मुद्दे पीछे न छूटें। अंततः सवाल यह नहीं कि मुख्यमंत्री नाराज हुए या पत्रकारों की व्यवस्था बिगड़ी। असली सवाल यह है कि ऐसी परिस्थितियों में संवाद बचाने की जिम्मेदारी कौन निभाएगा? क्योंकि सत्ता का अहंकार हो या पत्रकारिता की अव्यवस्था दोनों का नुकसान अंततः जनता और लोकतंत्र को ही उठाना पड़ता है।

तबादलों की हर आहट के बीच ग्वालियर पर बरकरार भरोसा, कलेक्टर रुचिका चौहान और एसपी धर्मवीर सिंह अपनी कार्यशैली से बना रहे अलग पहचान

मध्यप्रदेश में कभी 1 आदेश तो कभी लंबी तबादला सूची से बदलते हैं जिलों के प्रशासनिक चेहरे, लेकिन ग्वालियर के कलेक्टर और एसपी को लेकर चर्चाओं के बीच कायम है निरंतरता; कानून-व्यवस्था से लेकर प्रशासनिक व्यवस्थाओं तक दोनों अधिकारियों की कार्यशैली पर टिकी हैं शहरवासियों की उम्मीदें।

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। मध्यप्रदेश की प्रशासनिक और पुलिस व्यवस्था में तबादले कोई नई बात नहीं हैं। कभी किसी जिले के कलेक्टर को 1 आदेश के जरिए बदल दिया जाता है, तो कभी पुलिस अधीक्षकों के तबादलों की सूची सामने आती है। कई बार एक साथ बड़ी संख्या में आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के कार्यक्षेत्र में बदलाव होता है, जिससे प्रदेश के प्रशासनिक गलियारों में चर्चाओं का दौर शुरू हो जाता है। ऐसी हर आहट के बीच कुछ जिलों पर लोगों की नजरें विशेष रूप से टिक जाती हैं और उनमें ग्वालियर भी शामिल है। ग्वालियर को लेकर चर्चा केवल संभावित तबादलों तक सीमित नहीं है, बल्कि इस बात पर भी रहती है कि यहां प्रशासनिक और पुलिस नेतृत्व किस तरह अपनी जिम्मेदारियों को निभा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश सरकार में प्रशासनिक कसावट, कानून-व्यवस्था और जनसमस्याओं के समाधान को लेकर अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। मुख्यमंत्री के पास गृह विभाग की जिम्मेदारी भी है, इसलिए पुलिस व्यवस्था और अपराध नियंत्रण को लेकर सरकार की अपेक्षाएं स्वाभाविक रूप से अधिक रहती हैं। ऐसे माहौल में ग्वालियर के कलेक्टर श्रीमती





रुचिका चौहान और पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह की कार्यशैली चर्चा का विषय बनी रहती है। कलेक्टर रुचिका चौहान की जिम्मेदारी केवल सरकारी बैठकों और विभागीय समीक्षा तक सीमित नहीं है। जिले में प्रशासनिक समन्वय बनाए रखना, जनसुनवाई में सामने आने वाली समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना, सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी करना और विभिन्न विभागों को जवाबदेह बनाना उनके दायित्वों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। किसी भी जिले में कलेक्टर की वास्तविक पहचान इस बात से बनती है कि सरकारी व्यवस्था आम नागरिक तक कितनी प्रभावी ढंग से पहुंचती है और लोगों की समस्याओं पर प्रशासन कितनी गंभीरता से काम करता है। ग्वालियर जैसे बड़े और महत्वपूर्ण शहर में इन जिम्मेदारियों का महत्व और भी बढ़ जाता है। दूसरी ओर, पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह के सामने अपराध नियंत्रण, कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने, अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई और पुलिस तंत्र को सक्रिय रखने जैसी बड़ी चुनौतियां हैं। ग्वालियर की भौगोलिक स्थिति, तेजी से बढ़ता शहरी विस्तार और अलग-अलग तरह की आपराधिक चुनौतियां पुलिस के लिए लगातार सतर्कता की मांग करती हैं। ऐसे में पुलिस नेतृत्व की भूमिका केवल घटनाओं के बाद कार्रवाई करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अपराधों की रोकथाम, पुलिसकर्मियों की जवाबदेही और आम नागरिकों में सुरक्षा का भरोसा कायम करने से भी जुड़ी होती है। एसपी धर्मवीर सिंह के नेतृत्व में पुलिस की कार्रवाई और अपराध नियंत्रण को लेकर होने वाली चर्चाएं इसी व्यापक जिम्मेदारी के संदर्भ में देखी जाती हैं। हालांकि किसी भी अधिकारी के काम का वास्तविक आकलन केवल पद पर बने रहने से नहीं, बल्कि उसके कार्यकाल में हुए काम, परिणामों और जनता के अनुभवों से होना चाहिए। यही कसौटी कलेक्टर और एसपी, दोनों पर समान रूप से लागू होती है। इसके बावजूद मध्यप्रदेश में जब भी संभावित तबादला सूची को लेकर अटकलें तेज होती हैं, तब ग्वालियर के प्रशासनिक और पुलिस नेतृत्व को लेकर भी चर्चाएं शुरू हो जाती हैं। कुछ लोग बदलाव की संभावना तलाशते हैं, तो कुछ मौजूदा अधिकारियों के कामकाज और निरंतरता को महत्वपूर्ण मानते हैं। तबादले की उम्मीद लगाए बैठे लोगों के लिए हर नई सूची उत्सुकता पैदा करती है, लेकिन जब उसमें ग्वालियर के कलेक्टर और एसपी के नाम नहीं होते, तो चर्चाओं का एक नया दौर शुरू हो जाता है। यही सिलसिला ग्वालियर को प्रदेश की प्रशासनिक चर्चाओं में अलग स्थान देता है। हालांकि किसी अधिकारी का तबादला नहीं होना अपने आप में मुख्यमंत्री की विशेष पसंद या सरकार की ओर से किसी औपचारिक प्रशंसा का प्रमाण नहीं है। प्रशासनिक निर्णयों के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। फिर भी किसी महत्वपूर्ण जिले में नेतृत्व की निरंतरता को इस दृष्टि से देखा जा सकता है कि सरकार और प्रशासन मौजूदा व्यवस्था के साथ आगे काम करने का निर्णय ले रहे हैं। ग्वालियर के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि कलेक्टर रुचिका चौहान और एसपी धर्मवीर सिंह अपने-अपने क्षेत्रों में जनता की अपेक्षाओं पर कितना खरा उतरते हैं। शहर को ऐसा प्रशासन चाहिए जो समस्याओं पर समय रहते ध्यान दे, और ऐसी पुलिस चाहिए जो अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई करते हुए आम नागरिकों के मन में सुरक्षा का भरोसा मजबूत करे। तबादलों की अटकलें आती-जाती रहेंगी, सूचियों को लेकर चर्चाएं भी चलती रहेंगी, लेकिन किसी अधिकारी की असली पहचान उसके काम से ही बनती है। ग्वालियर के कलेक्टर और एसपी के सामने भी यही चुनौती है कि वे निरंतरता को उपलब्धियों में बदलें और अपने कामकाज से यह साबित करें कि किसी पद पर बने रहने से अधिक महत्वपूर्ण उस पद की जिम्मेदारी को प्रभावी ढंग से निभाना है।

ग्वालियर के प्रशासन की एक अलग पहचानः जब कलेक्टर की सोच में जनसेवा और विकास दोनों दिखाई देते हैं

महिला सशक्तिकरण से लेकर जनकल्याण तक, पर्यावरण संरक्षण से रोजगार के अवसरों तक– कलेक्टर रुचिका चौहान की कार्यशैली में प्रशासन को जनता से जोड़ने की कोशिश दिखाई देती है

अचलेश्वर एक्सप्रेस, ग्वालियर

किसी जिले की पहचान केवल उसकी ऐतिहासिक विरासत, भौगोलिक सीमाओं और सरकारी कार्यालयों से नहीं बनती, बल्कि उसकी पहचान इस बात से भी बनती है कि वहां का प्रशासन आम नागरिकों की जरूरतों को कितनी गंभीरता से समझता है। सरकारी योजनाएं कागजों से निकलकर लोगों के जीवन तक कितनी पहुंचती हैं, महिलाओं को आगे बढ़ने के कितने अवसर मिलते हैं, युवाओं के भविष्य के लिए कितनी संभावनाएं तैयार होती हैं और विकास के साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को कितनी प्राथमिकता दी जाती है–ये ऐसे सवाल हैं, जिनके जवाब किसी भी प्रशासन की वास्तविक तस्वीर सामने रखते हैं। ग्वालियर में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान की कार्यशैली और उनसे जुड़ी विभिन्न पहलों को इन्हीं कसौटियों पर देखना जरूरी है। एक प्रशासनिक अधिकारी की असली उपलब्धि केवल बैठकों की संख्या या आदेशों की लंबी सूची नहीं होती, बल्कि वह सकारात्मक बदलाव होता है, जो आम आदमी महसूस कर सके। रुचिका चौहान से जुड़ी जनहितकारी पहलों में प्रशासनिक जिम्मेदारी के साथ सामाजिक सरोकारों को जोड़ने का प्रयास दिखाई देता है।

महिला सशक्तिकरणः केवल नारा नहीं, आत्मनिर्भरता की दिशा में पहल

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में 'शक्ति दीदी' जैसी पहल का महत्व केवल किसी योजना के नाम तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य महिलाओं को अवसरों से जोड़ना, उनकी क्षमताओं को पहचान देना और उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनने की दिशा में प्रोत्साहित करना है। जब प्रशासन महिलाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता के अवसरों से जोड़ने की बात करता है, तो उसका प्रभाव परिवार से लेकर समाज तक पहुंच सकता है। इसी तरह महिला जनप्रतिनिधियों को अपनी जिम्मेदारियां स्वयं निभाने और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका लेने का संदेश देना लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण सोच है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं के लिए योजनाएं बनाना नहीं, बल्कि उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर देना भी है। इस दृष्टि से ऐसी पहलों को निरंतरता देना और उनके परिणामों को जमीन पर सुनिश्चित करना प्रशासन के लिए महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

निवेश और रोजगारः ग्वालियर के भविष्य से जुड़ा सवाल

ग्वालियर ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ औद्योगिक, व्यापारिक और शैक्षणिक संभावनाओं वाला शहर भी है। यहां के युवाओं को रोजगार के अवसर मिलें, स्थानीय कारोबार को प्रोत्साहन मिले और महिलाओं की भागीदारी आर्थिक गतिविधियों में बढ़े, तो इसका लाभ पूरे क्षेत्र को मिल सकता है। निवेश को प्रोत्साहित करने, औद्योगिक अवसरों को बढ़ावा देने और महिलाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं विकसित करने से जुड़े प्रयास इसी व्यापक विकास दृष्टि का हिस्सा हैं। किसी जिले की आर्थिक प्रगति का मूल्यांकन केवल निवेश संबंधी बैठकों से नहीं, बल्कि इस बात से होना चाहिए कि कितने नए अवसर बने, स्थानीय युवाओं को कितना लाभ मिला और छोटे कारोबारियों तथा उद्यमियों के लिए परिस्थितियां कितनी अनुकूल हुईं। ग्वालियर के पास संभावनाओं की कमी नहीं है; आवश्यकता उन संभावनाओं को ठोस परिणामों में बदलने की है। प्रशासन यदि उद्योग, निवेशकों, स्थानीय उद्यमियों और युवाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर सके, तो यह जिले की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकता है।

जनसेवा और डिजिटल व्यवस्थाः आम नागरिक को मिले सरल समाधान

आम नागरिक का सरकारी कार्यालयों से सामना अक्सर किसी प्रमाण-पत्र, राजस्व प्रकरण, सामाजिक सुरक्षा योजना, भू-अभिलेख, जनशिकायत या सीएम हेल्पलाइन से जुड़ी समस्या के कारण होता है। ऐसे में प्रशासन की सबसे बड़ी परीक्षा यह होती है कि नागरिक को अनावश्यक परेशानियों से बचाते हुए उसका काम समय पर हो। डिजिटल सेवाओं का विस्तार तभी सार्थक है, जब तकनीक का लाभ उस व्यक्ति तक भी पहुंचे, जिसे ऑनलाइन प्रक्रिया की पूरी जानकारी नहीं है। शिकायतों का समयबद्ध निराकरण, पात्र हितग्राहियों तक योजनाओं का लाभ और राजस्व संबंधी मामलों में पारदर्शिता ऐसी प्राथमिकताएं हैं, जिनसे जनता का भरोसा मजबूत होता है। कलेक्टर के नेतृत्व में इन व्यवस्थाओं को लगातार बेहतर बनाने का प्रयास प्रशासन की कार्यक्षमता को अधिक प्रभावी बना सकता है। जनता को केवल यह नहीं जानना चाहिए कि कौन-सी सुविधा उपलब्ध है, बल्कि उसे यह भी महसूस होना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर उसकी समस्या सुनने और समाधान करने वाली व्यवस्था मौजूद है।

प्रशासनिक नेतृत्व की पहचानः योजनाओं के साथ संवेदनशीलता भी

एक अच्छे प्रशासक से अपेक्षा होती है कि वह नियमों का पालन सुनिश्चित करे, विभागों के बीच समन्वय बनाए, सरकारी योजनाओं की निगरानी करे और जरूरत पड़ने पर कठिन निर्णय लेने का साहस भी दिखाए। लेकिन इसके साथ यह भी आवश्यक है कि प्रशासन आम लोगों की परिस्थितियों और समस्याओं के प्रति संवेदनशील बना रहे। गरीब परिवारों, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों, युवाओं और दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जरूरतों को समझना किसी भी जनोन्मुखी प्रशासन की बुनियाद है। कलेक्टर रुचिका चौहान से जुड़ी सकारात्मक पहलों का उल्लेख करते समय यही व्यापक दृष्टिकोण सामने रखना जरूरी है। किसी अधिकारी की प्रशंसा उसके पद के कारण नहीं, बल्कि उसके कार्यों और उनसे पैदा होने वाले जनहितकारी परिणामों के आधार पर होनी चाहिए। यही पत्रकारिता की जिम्मेदारी है और यही प्रशासनिक जवाबदेही की कसौटी भी।

पर्यावरण संरक्षणः संदेश ऐसा, जिसका असर समाज तक पहुंचे



विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ई-रिक्शा से कलेक्ट्रेट पहुंचने और पौधारोपण जैसी पहलें एक अलग संदेश देती हैं। पर्यावरण संरक्षण की चर्चा अक्सर भाषणों, अभियानों और औपचारिक कार्यक्रमों तक सीमित रह जाती है, लेकिन जब जिम्मेदार पदों पर बैठे अधिकारी अपने व्यवहार के माध्यम से कोई संदेश देते हैं, तो उसकी पहुंच व्यापक हो सकती है। पर्यावरण की रक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की भागीदारी से जुड़ा विषय है। सार्वजनिक जीवन में छोटे-छोटे सकारात्मक उदाहरण लोगों को अपनी आदतों पर विचार करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। हालांकि ऐसी पहलों की वास्तविक सफलता तभी होगी, जब पौधारोपण के बाद पौधों की देखभाल हो, हरित क्षेत्र बढ़ें और पर्यावरण संरक्षण को नियमित प्रशासनिक प्राथमिकता बनाया जाए। संदेश देना महत्वपूर्ण है, लेकिन उस संदेश को स्थायी परिणाम में बदलना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

अच्छे कामों की सराहना जरूरी, निरंतरता उससे भी ज्यादा जरूरी

अक्सर सार्वजनिक चर्चा में प्रशासन की आलोचनाएं अधिक सुनाई देती हैं। समस्याओं को सामने लाना पत्रकारिता का कर्तव्य है, लेकिन जहां कोई सकारात्मक पहल दिखाई देती है, वहां उसका निष्पक्ष उल्लेख करना भी उतना ही आवश्यक है। ग्वालियर कलेक्टर रुचिका चौहान से जुड़ी महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण जागरूकता, रोजगार और जनसेवा की पहलों को इसी नजरिये से देखना चाहिए। इन प्रयासों की सराहना इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अच्छे कामों को पहचान मिलने से प्रशासन में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा और समाज में जनहित के प्रति जागरूकता बढ़ सकती है। साथ ही यह अपेक्षा भी स्वाभाविक है कि इन पहलों की नियमित समीक्षा हो, उनके परिणाम सार्वजनिक हों और जहां सुधार की गुंजाइश हो, वहां उसे स्वीकार करते हुए आगे बढ़ा जाए। किसी भी प्रशासन की प्रतिष्ठा केवल अच्छी शुरुआत से नहीं, बल्कि उस शुरुआत को लगातार बेहतर बनाने से स्थापित होती है।

ग्वालियर को चाहिए ऐसा प्रशासन, जिसकी उपलब्धि जनता के चेहरे पर दिखेः ग्वालियर की ऐतिहासिक पहचान जितनी समृद्ध है, उसके भविष्य की संभावनाएं भी उतनी ही व्यापक हैं। शहर और जिले को ऐसे प्रशासनिक प्रयासों की जरूरत है, जो विकास को गति दें, महिलाओं को अवसर प्रदान करें, युवाओं के लिए रोजगार के रास्ते खोलें, सरकारी सेवाओं को सरल बनाएं और आम नागरिक की शिकायत को गंभीरता से सुनें। कलेक्टर रुचिका चौहान के नेतृत्व में सामने आने वाली सकारात्मक पहलों को इसी व्यापक अपेक्षा के संदर्भ में देखना चाहिए। यह किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा भर का विषय नहीं, बल्कि उस प्रशासनिक सोच की सराहना है, जिसमें पद के साथ जिम्मेदारी और अधिकार के साथ जनसेवा का भाव जुड़ा हो। उम्मीद यही है कि ग्वालियर में जनहित से जुड़े प्रयास आगे भी निरंतरता के साथ आगे बढ़ें, उनकी उपलब्धियां धरातल पर दिखाई दें और नागरिकों का भरोसा मजबूत हो। क्योंकि अंततः किसी भी कलेक्टर की सबसे बड़ी उपलब्धि किसी समारोह में मिली प्रशंसा नहीं, बल्कि वह संतोष है, जो एक आम नागरिक को तब मिलता है, जब उसकी समस्या का समाधान होता है और उसे लगता है कि शासन वास्तव में उसके लिए काम कर रहा है।

प्रेस नोट की कार्रवाई में माहिर विभाग, जमीन पर अवैध शराब रोकने में कितना असरदार तंत्र?

अचलेश्वर एक्सप्रेस, ग्वालियर

छापेमारी, जब्ती और प्रेस नोट तक सिमटी कार्रवाई? कलेक्टर के आदेश का असली इम्तिहान अब पुलिस और आबकारी विभाग का!



ग्वालियर में अवैध शराब के खिलाफ आबकारी विभाग ने 11 प्रकरण दर्ज किए, करीब 1.35 लाख रुपये की मदिरा जब्त की और 1,100 किलोग्राम गुड़ लाहन नष्ट किया। आंकड़े प्रेस नोट में प्रभावशाली दिखाई देते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या इन कार्रवाइयों से अवैध शराब के कारोबार पर वास्तव में लगाम लगेगी? या फिर अगले ही दिन वही सड़कें, वही ठिकाने और वही कारोबार दोबारा सक्रिय नजर आएंगे? माफ कीजिएगा साहब, छापेमारी करना, कुछ सामग्री जब्त करना, प्रकरण दर्ज करना और प्रेस नोट जारी कर देना कार्रवाई का एक हिस्सा है; लेकिन अवैध कारोबार को दोबारा खड़ा होने से रोकना असली जिम्मेदारी है। पुलिस और आबकारी विभाग की परीक्षा कागजों पर नहीं, जमीन पर होनी चाहिए। जब कलेक्टर के आदेश पर अभियान चल सकता है, अधिकारी मैदान में उतर सकते हैं, जब्ती हो सकती है और प्रकरण दर्ज किए जा सकते हैं, तो फिर सवाल उठता है कि अवैध शराब का कारोबार बार-बार पनपने की गुंजाइश आखिर बचती क्यों है? क्या दोनों विभागों की पूरी ताकत केवल छापेमारी और खानापूर्ति वाली कार्रवाई तक ही सीमित रह गई है? आदेशों का पालन कराने का दावा करने वाले तंत्र को यह भी साबित करना होगा कि कार्रवाई के बाद अवैध बिक्री रुकती है, न कि कुछ घंटों के विराम के बाद फिर शुरू हो जाती है। यदि बार-बार कार्रवाई के बावजूद वही स्थिति लौटती है, तो यह निगरानी, रणनीति और जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े करती है। ऐसे में केवल कार्रवाई की संख्या बताकर अपनी पीठ थपथपाना पर्याप्त नहीं होगा। पुलिस को अपने सूचना तंत्र और स्थानीय निगरानी का हिसाब देना चाहिए, वहीं आबकारी विभाग को बताना चाहिए कि जब्त शराब, दर्ज प्रकरणों और नष्ट किए गए लाहन के बाद आगे की रोकथाम के लिए क्या ठोस कदम उठाए गए। सवाल सीधा है–क्या ये विभाग केवल कार्रवाई दिखाने में सक्षम हैं, या अवैध शराब का कारोबार रोकने की जिम्मेदारी भी प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं? कलेक्टर के आदेश का वास्तविक सम्मान प्रेस नोट जारी करने में नहीं, उसके परिणाम जमीन पर उतारने में है। अब जनता को आंकड़े नहीं, असर चाहिए; दावे नहीं, जवाब चाहिए। क्योंकि अगर कार्रवाई के बाद भी अवैध शराब का कारोबार पहले की तरह चलता रहा, तो फिर सवाल केवल शराब माफिया पर नहीं, उस पूरी व्यवस्था पर उठेगा जो आदेश तो जारी करती है, लेकिन उनके स्थायी परिणाम सुनिश्चित करने में विफल दिखाई देती है।

तेज रफ्तार से आ रहा धान से भरा अनियंत्रित ट्रक सड़क किनारे चल रहे श्रद्धालुओं को रौंदते हुए ढलान पर पलटा

ग्वालियर में शीतला माता मंदिर के गेट पर ट्रक ने 40 से ज्यादा श्रद्धालुओं को कुचला, 15 की मौत

ट्रक मालिक और ड्राइवर गिरफ्तार | बेकाबू ट्रक ने पैदल जा रहे श्रद्धालुओं को बुरी तरह रौंदा | घायलों को 50,000 रुपए

ग्वालियर

शहर के चीनौर-नयागांव हाईवे स्थित शीतला माता मंदिर रोड पर शनिवार-रविवार की दरमियानी रात एक दर्दनाक और वीभत्स हादसा हो गया। तेज रफ्तार से आ रहा धान से भरा अनियंत्रित ट्रक सड़क किनारे चल रहे श्रद्धालुओं को रौंदते हुए ढलान पर पलट गया। इस भीषण दुर्घटना में 15 लोगों की मौत हो गई है। ट्रक के नीचे पचास से अधिक लोग दब गए थे। सुबह 4 बजे तक ट्रामा सेंटर पर एंबुलेंस से शव व घायलों को लाने का क्रम जारी रहा। घटना के बाद से इलाके में कोहराम मचा हुआ है। भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। पुलिस ने ट्रक मालिक मोहित सिंह और ड्राइवर दिलबाग दोनों गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार दो ट्रक थे, जिन्हें रास्ता नहीं पता था। वो गूगल मैप के सहारे चल रहे थे। एक ट्रक घाटी पर ही रुक गया, जबकि आगे वाला ट्रक अनियंत्रित हो गया और चार स्टॉपर तोड़ते हुए घुस गया। ग्वालियर के भीषण हादसे पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को प्राथमिक रिपोर्ट प्रशासन ने भेज दी है। जांच में बेकाबू ट्रक की फिटनेस और परमिट वैध पाए गए हैं। स्थिति का जायजा लेने मुख्यमंत्री जल्द ग्वालियर आ सकते हैं।



बेटे की मौत पर महिला ने पुलिस पर लगाए आरोप

महिला का पुलिस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उसका 19 साल का बेटा गौरव जिंदा था। उसकी सांसें चल रही थीं, लेकिन पुलिस ने उसे जबरदस्ती पोस्टमॉर्टम के लिए ले जाने को कहा। मैं बेटे को प्राइवेट हॉस्पीटल में ले जाना चाहती थी। दिया। वहां उसका अच्छा इलाज होता। मैं एंबुलेंस में अकेली थी। उसको लेकर हॉस्पीटल जा रही थी, तभी 20 के करीब पुलिस वालों ने एंबुलेंस में डंडे मार-मारकर भगा दिया। मेरे बेटे की मौत के जिम्मेदार ये पुलिस वाले हैं। इलाज में देरी के कारण उसकी जान गई है।

अनियंत्रित ट्रक श्रद्धालुओं पर कहर बनकर टूटा : शनिवार-रविवार की रात करीब 1.40 बजे एक भारी ट्रक अत्यंत तेज गति से शीतला माता मंदिर रोड की तरफ से गुजर रहा था। रोड की ढलान पर चालक ट्रक से नियंत्रण खो बैठा। अनियंत्रित हुआ यह वाहन सड़क मार्ग पर पैदल चल रहे श्रद्धालुओं पर कहर बनकर टूटा और उन्हें कुचलते हुए पलट गया। घटना की अचानक हुई इस भीषणता से आसपास के लोग दहल उठे। सूचना मिलते ही एसएसपी धर्मवीर सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषिकेश बघेल समेत शहर के कई थानों का पुलिस बल और प्रशासनिक अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंच गए। मौके से नीचे दबे लोगों से गंभीर घायलों को बाहर निकाला गया। घायलों की हालत को देखते हुए बिना एंबुलेंस के इंतजार कराए एक लोडिंग वाहन में डालकर तुरंत जयारोग्य अस्पताल के ट्रामा सेंटर रवाना किया गया। वहीं एक प्रत्यक्षदर्शी कृणाल चौहान ने बताया कि मैं और मेरे साथी शीतला माता मंदिर पैदल जा रहे थे। अचानक ट्रक के ब्रेक फेल हो गए और ट्रक जनता को रौंदता हुआ लोगों पर जा गिरा।

राष्ट्रपति ने हादसे पर जताया दुख

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने एक्स पर ग्वालियर शीतला मंदिर हादसे पर शोक व्यक्त करते हुए लिखा कि ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुई सड़क दुर्घटना में लोगों की मृत्यु का समाचार दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करती हूं और घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।



पीएम मोदी ने मुआवजे का किया एलान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर ग्वालियर शीतला मंदिर हादसे पर शोक व्यक्त करते हुए पीड़ित परिजनों को मुआवजे का एलान किया है। उन्होंने लिखा कि मध्य प्रदेश के ग्वालियर में हुए हादसे में लोगों की जान जाने की खबर से बहुत दुख हुआ। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी संवेदनाएं। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि जान गंवाने वालों के परिजनों को PMNRF से 2-2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। घायलों को 50,000 रुपये दिए जाएंगे।



हादसे में 15 मृतकों की हुई पहचान

- सत्येंद्र गुर्जर पुत्र जगदीश गुर्जर उमर 22 साल निवासी महलगांव ग्वालियर
- सरला तोमर पत्नी राजेंद्र कुमार 50 साल निवासी हनुमान पहाड़ी राजीव नगर गुड़ा गुड़ी का नाका ग्वालियर
- गौरव परिहार पुत्र कमलेश परिहार उमर 18 साल निवासी बड़ा गांव खुरेरी ग्वालियर
- महेश शर्मा पुत्र मातादीन शर्मा उम्र 45 साल निवासी सहसराम गसवानी श्योपुर
- विमलेश पुत्र बबलू बघेल उमर 18 साल निवासी महागावरा थाना सीहोर जिला शिवपुरी
- देवेश बघेल पुत्र हरि सिंह बघेल उमर 17 साल निवासी मावटा थाना भितरवार
- प्रिंस उर्फ छोटू जाटव पुत्र संतोष जाटव उम्र 16 साल निवासी चौहान प्याऊ गल्ला कोठार
- शौर्य शर्मा पुत्र संजय शर्मा उम्र 15 साल निवासी सहसराम गोस्वामी शिवपुरी
- हेमंत राठौड़ पुत्र जबर सिंह राठौड़ उमर 21 साल निवासी यादव धर्म कांटा हजीरा ग्वालियर
- दिव्यांश पुत्र अशोक कुशवाहा उमर 16 साल निवासी महेशपुरा सिकंदर कंपू ग्वालियर

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने किया मुआवजे का एलान

भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने एक्स पर लिखा कि ग्वालियर में हुए ट्रक हादसे में श्रद्धालुओं की मृत्यु का समाचार अत्यंत हृदयविदारक है। इस दुख की घड़ी में राज्य सरकार सभी प्रभावित परिवारों के साथ है। सभी मृतकों के परिजनों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। राज्य शासन की ओर से मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख रुपये, गंभीर घायलों को 2-2 लाख रूपये और अन्य घायलों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। सभी घायलों का निशुल्क इलाज किया जाएगा। प्रभावित परिवार ग्वालियर, शिवपुरी और श्योपुर से हैं। मंत्री एदल सिंह कंसाना और राकेश शुक्ला को ग्वालियर पहुंचने के निर्देश भी दिए हैं। बाबा महाकाल से प्रार्थना है कि दिवंगतों को अपने श्रीचरणों में स्थान दें, शोकाकुल परिजनों को यह गहन दुख सहन करने की शक्ति एवं घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें।



सरकार से मुआवजे की मांग

एक स्थानीय निवासी ने कहा कि जब मैंने चारों ओर देखा, तो वहां भारी अफरा-तफरी और कोहराम मचा हुआ था। लोग चीख-पुकार कर रहे थे और घबराहट में अपने परिजनों को ढूंढ रहे थे। लोगों को ट्रक के नीचे फंसा हुआ देखना बेहद दुखद था। जहां तक लापरवाही की बात है, तो यह पूरी तरह से ग्वालियर प्रशासन की लापरवाही का नतीजा है।

एक बहुत बड़ी चूक, जिसकी वजह से शीतला माता मंदिर में यह हादसा हुआ। इसने हमारी सनातन आस्था को गहरा आघात पहुंचाया है। लोगों की इस मंदिर में गहरी आस्था है। यह दिल तोड़ने वाला है।

मेरी मांग है कि सरकार और मुख्यमंत्री मोहन यादव, जो सनातन धर्म, उज्जैन और मंदिरों की बात करते हैं। वे आज ग्वालियर आएं। शीतला माता मंदिर हादसे में जान गंवाने वालों के परिवारों को मुआवजा दिया जाए। घायलों का मुफ्त इलाज हो। अगर ऐसा नहीं होता है, तो मैं अस्पताल जाकर भूख हड़ताल शुरू कर दूंगा। न्याय मिलना चाहिए। हमारे लोगों के साथ हुए इस अन्याय को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

हादसे में जान गंवाने वालों का फूटा गुस्सा



ग्वालियर के शीतला माता मंदिर के पास हुए दर्दनाक हादसे ने कई परिवारों को जिंदगी भर का घाव दे दिया है। इसी हादसे में अपनी जान गंवाने वाले बड़ागांव खुरेरी निवासी गौरव परिहार की मां का रुदन वहां मौजूद हर शख्स की आंखें नम कर रहा है। पोस्टमार्टम हाउस के बाहर बिलखती मां ने अपने जवान बेटे की मौत का सीधा जिम्मेदार पुलिस और प्रशासन की लापरवाही को ठहराया है।

नो एंट्री में ट्रक को प्रवेश कैसे मिला? हादसे के लिए कांग्रेस विधायक ने प्रशासन को ठहराया जिम्मेदार

ग्वालियर। शीतला माता मंदिर में हुए हादसे को लेकर कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिंह सिकरवार ने पुलिस और प्रशासन को जिम्मेदार ठहराते हुए गंभीर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि शीतला माता मंदिर पूरे अंचल के लोगों की आस्था और श्रद्धा का प्रमुख केंद्र है। सप्तमी के दिन श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ना स्वाभाविक था। ऐसे में प्रशासन को अतिरिक्त सतर्कता बरतनी चाहिए थी, लेकिन मेले की सुरक्षा व्यवस्था में तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों ने लापरवाही की, जिसका खामियाजा लोगों को अपनी जान देकर भुगतना पड़ा।



संपादकीय

संसद का विशेष सत्र सरकार के लिए आग का दरिया ?

पिछले कुछ दिनों से लगातार खबर मिल रही है कि केंद्र सरकार एक बार फिर संसद का विशेष सत्र बुलाने जा रही है। दरअसल अभी तक मानसून सत्र का अवसान नहीं हुआ है। इसके पहले 16 से 18 अप्रैल 2026 को 30 दिन का विशेष सत्र पश्चिम बंगाल चुनाव के पहले बुलाया गया था। परिसीमन बिल को महिला आरक्षण बिल नारी शक्ति वंदन कानून के रूप में इसे पेश किया गया था 131 वां संविधान संशोधन विधेयक जिसे दो तिहाई बहुमत से पास होना था यह उस समय संसद में पास नहीं हो पाया था। इस बिल को दोनों सदनों में दो तिहाई बहुमत से पास होना जरूरी था। अब परिस्थितियों बदल गई हैं। पूरे देश में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार की स्थिति को लेकर धरना और प्रदर्शन हो रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस और शिवसेना में बगावत हो गई है। सरकार को ऐसा लगता है कि इस बिल को प्रस्तुत करने का सही समय है। तमिलनाडु में डीएमके इंडिया गठबंधन से दूर हो गई है। सरकार इस बिल को आसानी के साथ पास करा लेगी। सरकार के सूत्रों का कहना है कि उसने दो तिहाई बहुमत जुटा लिया है। सरकार लगातार प्रयास कर रही थी, जिसके कारण मानसून सत्र का सत्रावसान भी नहीं किया गया था। टीएमसी के जितने सांसद दल-बदल कानून के लिए जरूरी थे अभी उनका विवाद सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। पर्याप्त संख्या में टीएमसी के सांसद नहीं होने से लोकसभा अध्यक्ष द्वारा उन्हें अभी तक अनुमति नहीं दी गई है, जिसके कारण दल-बदल कानून के अंतर्गत सांसदों की सदस्यता भी खतरे में पड़ी हुई है। बिहार में जिस तरह से जनता दल यू को तोड़ा गया है, इस समय क्षेत्रीय दलों में जिस तरह भय भाजपा को लेकर देखा जा रहा है, आंध्र प्रदेश में भी चंद्रबाबू नायडू को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं सामने आ रही हैं। जनमत इस समय सरकार के खिलाफ जाता हुआ दिख रहा है। सरकार के पास स्पष्ट बहुमत नहीं है। सहयोगी दलों के सहारे सरकार बनी हुई है। ऐसी स्थिति में इसे सरकार के लिए एक बड़ा खतरा भी माना जा रहा है। देश में 50 साल के बाद एक बार फिर जनता सड़कों पर आ गई है 13 करोड़ से ज्यादा मतदाताओं के वोट काटे गए थे।

राम के आध्यात्मिक मूल्यों को करे आत्मसात

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने समुद्र तट पर शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ किया था और नौ दिनों की पूजा के बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान करते हुए विजय प्राप्त की थी, इसीलिए इस पर्व को 'विजयादशमी' पर्व के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि उसी के बाद से दशहरा पर्व को अधर्म पर धर्म तथा असत्य पर सत्य की जीत के पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। दशहरे को रावण पर राम की विजय अर्थात् आसुरी शक्तियों पर सात्विक शक्तियों की विजय तथा बुराई पर अच्छाई की, अधर्म पर धर्म की, अन्याय पर न्याय की, दानवता पर मानवता की, घृणा पर प्रेम की, असत्य पर सत्य की, पाप पर पुण्य की जीत के रूप में मनाया जाता है। सनातन संस्कृति में दशहरा विजय और अत्यंत शुभता का प्रतीक माना गया है।

– डॉ. श्री गोपाल नारसन

(दशहरा पर विशेष)



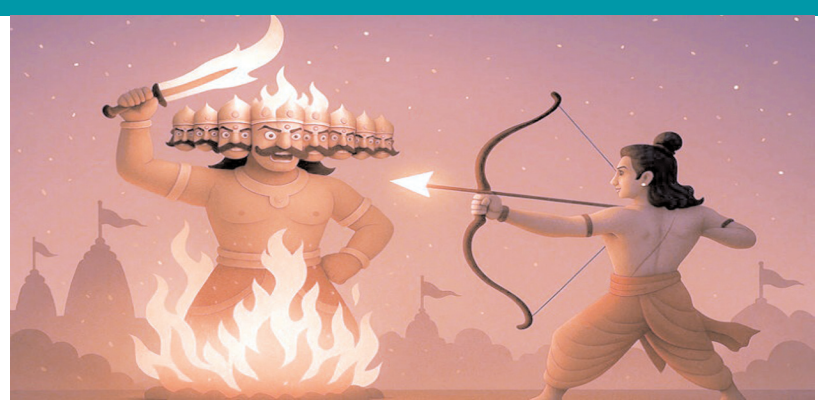
रावण पर राम की विजय का प्रतीक है दशहरा पर्व। इस अवसर पर हम राम की जय जयकार करते है और रावण को उसकी बुराइयों के कारण जलाने का जश्न मनाते है।वर्षों से चली आ रही यह परम्परा आगे भी जारी रहेगी।लेकिन बार बार रावण को जला देने पर भी आज तक रावण रूपी बुराई समाप्त नहीं हो पाई।सच यह है कि रावण तो हम सबके अंदर है,जो विकार रूप में बैठा है।जिसे हम हटाना ही नहीं चाहते।हम राम रावण से जुड़े किस्सों को रामायण या फिर राम चरित मानस के माध्यम से मंचित कर उन्हें हर वर्ष याद करते है। रामायण के मुख्य पात्र राम, सीता , हनुमान व रावण हैं । रामायण हिंदू धर्म की एक प्रमुख आध्यात्मिक पुस्तक मानी जाती है परंतु बिडंबना यह है कि रामायण को बार बार पढ़ने व मंचित करने के वावजूद भी उसमें लिखे आध्यात्मिक मूल्यों की धारणा नहीं हो पाती । हम राम के नाम रूप पर बहस करते रहते हैं। इससे रामायण रचना की सार्थकता कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती है । इसके लिए आवश्यक है कि हम रामायण को आत्मसात करे।

रामायण महर्षि बाल्मीकी के द्वारा लिखित एक आध्यात्मिक पुस्तक है । हम यह जानते हैं कि महर्षि बाल्मीकी आध्यात्मिक जागृति के एक प्रेरक नायक थे ।ईश्वरीय अनुभूति के द्वारा उनका जीवन दिव्य व महान हो गया था। जो भी ईश्वर की अनुभूति कर लेता है ।वह दूसरों का शुभचिंतक हो जाता है व स्वयं की अनुभूतियों को समाज कल्याण हेतु प्रयोग कर लोगों में एक नई सोच फैलाने का कार्य करता है, स्वयं का जीवन आध्यात्मिक होने पर ही महर्षि बाल्मीकी ने समाज में आध्यात्मिक जागृति लाने का बीड़ा उठाया था । मोह माया में फँसें लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान रोचक लग सके ,इसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान को एक रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। जिसमें मुख्य नायक व नायिका राम और सीता को रखा गया । जैसे आजकल सरकार या कोई भी समाज सुधारक यदि लोगों को किसी भी बुराई के बारे में जागरूक करना चाहतें है तो वह एक डॉक्युमेंट्री फ़िल्म या विज्ञापन के ज़रिए इस संदेश को जन - जन में पहुँचाते हैं । लघु फ़िल्म या विज्ञापन में वह किसी ऐसे चेहरे को प्रयोग करेगें जो लोग़ों में प्रसिद्ध हो ,ताकि लोग उसको आत्मसात करें । महर्षि बाल्मीकी ने त्रेता युग के बाद आए द्वापर युग व उसके बाद आने वाले समय में समाज में आध्यात्मिक क्रांति लाने हेतु राम व सीता का नाम व चरित्र का प्रयोग किया जो त्रेता युग में विश्व में राज्य करके गए थे। विडम्बना इस बात की है कि हम रामायण में लिखित सब पात्रों को उसी तरह से स्वीकार करते हैं जैसे रामायण को पढ़ने पर जान पढ़ता है परन्तु इस तरह से तो रामायण में दर्शाए गए पूर्णतः अहिंसक पात्र भी हिंसक नज़र आते हैं। जैसे राम के द्वारा रावण का वध होना भगवान की परिभाषा को खंडित करता है, राम यदि भगवान हैं तो वह हिंसक हो ही नहीं सकते और राम यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर है तो उनकी सीता को एक दैत्य (रावण) कैसे उठाकर ले जा सकता है ? इसलिए कहीं न कहीं रामायण को किसी और परिपेक्ष में देखने की आवश्यकता है

दशहराः रावण दहन नहीं, अपने भीतर के अहंकार के अंत का पर्व

– श्वेता गोयल

(दशहरा (20 अक्तूबर) पर विशेष)



दशहरा पर्व समस्त भारत में भगवान श्रीराम द्वारा लंकापति रावण के वध के रूप में अर्थात् बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में तथा आदि शक्ति दुर्गा द्वारा महाबलशाली राक्षसों महिषासुर व चण्ड-मुण्ड का वध किए जाने के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय पाने के लिए इसी दिन प्रस्थान किया था। भारतीय संस्कृति में दशहरा पर्व का अद्वितीय महत्व है. यह पर्व नवरात्रि के नौ दिवसीय उत्सव के बाद दशमी तिथि को मनाया जाता है। दरअसल हिन्दू धार्मिक ग्रंथों के अनुसार पर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। रावण ने श्रीराम की पत्नी माता सीता का हरण किया था और उन्हें रावण से मुक्त कराने के लिए भगवान राम ने लंका पर आक्रमण किया था। उस महायुद्ध के बाद जब भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया, तभी से इस त्योहार की नींव पड़ी और इसे 'अधर्म पर धर्म की विजय' के रूप में मनाया जाता है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि हिन्दू राजा अक्सर इसी दिन विजय के लिए प्रस्थान किया करते थे। इसी कारण इस पर्व को 'विजय के लिए प्रस्थान' का दिन भी कहा जाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने समुद्र तट पर शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ किया था और नौ दिनों की पूजा के बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान करते हुए विजय प्राप्त की थी, इसीलिए इस पर्व को 'विजयादशमी' पर्व के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि उसी के बाद से दशहरा पर्व को अधर्म पर धर्म तथा असत्य पर सत्य की जीत के पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। दशहरे को रावण पर राम की विजय अर्थात् आसुरी शक्तियों पर सात्विक शक्तियों की विजय तथा बुराई पर अच्छाई की, अधर्म पर धर्म की, अन्याय पर न्याय की, दानवता पर मानवता की, घृणा पर प्रेम की, असत्य पर सत्य की, पाप पर पुण्य की जीत के रूप में मनाया जाता है। सनातन संस्कृति में दशहरा विजय और अत्यंत शुभता का प्रतीक माना गया है। मान्यता है कि इसी दिन असुर महिषासुर का वध करके माता कात्यायनी विजयी हुई थी, इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर उसे मुक्ति प्रदान की थी, इसी दिन देवी सती अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अग्नि में समा गई थी, इसी दिन पांडवों को वनवास हुआ था, इसी दिन पांडवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की थी। इसी दिन शिरडी के साईं बाबा ने समाधि ली थी।

हिन्दू धर्म में विजयादशमी त्योहार का न केवल धार्मिक महत्व है बल्कि इसे शुभ मुहूर्त में से एक माना जाता है। इस दिन नई चीजें खरीदना, नया काम शुरू करना या किसी भी शुभ कार्य का प्रारंभ करना अच्छा माना जाता है। इस वर्ष दशहरा पर्व 20 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। माना जाता है कि दशहरा पर्व प्राचीन काल से ही मनाया जा रहा है और आरंभ में यह एक कृषि संबंधी लोकोत्सव था। किसान जब वर्षा ऋतु में बोई गई धान की पहली फसल घर लाते थे, तब यह उत्सव मनाते थे। दशहरे के दिन से ही वर्षा ऋतु की समाप्ति के साथ ही चातुर्मास समाप्त हो जाता है। दशहरा पर्व देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय एकता का पर्व है, जो राष्ट्रीय एकता, भाईचारे और सत्यमेव जयते का मंत्र देता है।

दशहरा पर्व का संबंध नवरात्रों से भी जोड़कर देखा जाता रहा है। इसे आसुरी शक्तियों पर नारी शक्ति की विजय का त्यौहार माना जाता है। आदि शक्ति दुर्गा को 'शक्ति' का रूप मानकर शारीरिक एवं मानसिक शक्ति प्राप्त करने के लिए नौ दिनों तक देवी के नौ अलग-अलग रूपों की व्रत, अनुष्ठान करके पूजा की जाती है। जगह-जगह मां दुर्गा की विशाल प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं और माता के जागरण भी किए जाते हैं। धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार दुर्गा पूजा से ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, धन-सम्पदा, आरोग्य, संतान सुख एवं आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है। अंतिम नवरात्र पर कुंवारी कन्याओं को भोजन कराकर नवरात्रों का समापन किया जाता है। मान्यता है कि आदि शक्ति दुर्गा ने दशहरे के ही दिन महाबलशाली असुर सम्राट महिषासुर का वध किया था। जब महिषासुर के अत्याचारों से भूलोक और देवलोक त्राहि-त्राहि कर उठे थे, तब आदि शक्ति मां दुर्गा ने नौ दिनों तक महिषासुर के साथ बहुत भयंकर युद्ध किया था और दसवें दिन उसका वध करते हुए उस पर विजय हासिल की थी। इन्हीं नौ दिनों को दुर्गा पूजा अथवा नवरात्र के रूप में और शक्ति संचय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है तथा महिषासुर पर आदि शक्ति मां दुर्गा की विजय वाले दसवें दिन को विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है।

श्राद्धों के समाप्ति वाले दिन मिट्टी के किसी बर्तन में मिट्टी में जौ बोए जाने की परम्परा भी बहुत से क्षेत्रों में देखने को मिलती है। दशहरे के दिन तक जौ उगकर काफी बड़े हो जाते हैं, जिन्हें 'ज्वारे' कहा जाता है। मिट्टी के जिस बर्तन में जौ बोए जाते हैं, उसे स्त्री के गर्भ का प्रतीक माना गया है और ज्वारों को उसकी संतान। दशहरे के दिन लड़कियां अपने भाईयों की पगड़ी अथवा सिर पर ज्वारे रखती हैं और भाई उन्हें कोई उपहार देते हैं। पश्चिम बंगाल, उत्तर और मध्य भारत के अलावा दशहरा पर्व अन्य राज्यों में भी क्षेत्रीय विषमता के बावजूद पूर्ण उमंग, उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। देशभर में जगह-जगह पर दशहरे के दिन रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद के पुतलों का दहन किया जाता है, जिसका उद्देश्य एक ही है कि हम अपने जीवन में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के महान् आदर्शों को आत्मसात करते हुए अपनी सभी दसों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर जितेन्द्रिय बनने का प्रयास करें।

दशहरे के दिन रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के काम, क्रोध, मद, लोभ और वासना रूपी पुतलों का दहन कर लोग अपने आगामी वर्ष की सफलता की कामना करते हैं।

दशहरे और शक्ति पूजा के आपसी संबंध के बारे में कहा जाता है कि जिन दिनों में राम ने शक्ति की उपासना की थी, उसी समय रावण और मेघनाद ने भी शक्ति उपासना की थी। आदि शक्ति ने दोनों पक्षों की पूजा-उपासना से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिए लेकिन विजय राम की ही हुई क्योंकि उनके साथ धर्म, मानवता, सत्य, निष्ठा, पुण्य इत्यादि गुण थे जबकि रावण भले ही बहुत बड़ा विद्वान था लेकिन उस समय उसके पास घमंड, वासना, क्रोध इत्यादि तमाम बुराईयां ही बुराईयां थी। पुराणों में बताया जाता है कि देवी ने राम को विजयी होने का आशीर्वाद दिया था जबकि रावण और मेघनाद को उनका कल्याण होने का आशीर्वाद दिया था। चूंकि रावण का कल्याण उसका अभिमान, उसकी दानवता और उसका अधर्म नष्ट होने में ही था, इसीलिए राम के हाथों उसे सद्गति प्राप्त हुई और राम की जीत हुई। सही मायनों में दशहरा पर्व अपने भीतर छिपे दुर्गुणों रूपी रावण को मारकर तमाम अवगुणों पर विजय प्राप्त करने का शुभकाल है।

राशिफल

मेष- कुटुम्ब की समस्याएं सुलझेगी, स्थिति पर नियंत्रण रखे असफलता अवश्य मिले।

वृष- कारोबार में लाभान्वित योजना बनेगी, कुछ नयी आशाऐं सफल अवश्य होगी।

मिथुन- कार्य कुशलता से संतोष, स्त्री वर्ग से हर्ष, कार्य व्यवसाय अवश्य ही होगा।

कर्क- धन लाभ आशानुकूल, सफलता का हर्ष, कार्य व्यवसाय अवश्य ही होगा।

सिंह- अधिकारियों की उपेक्षा से हानि होगी, मानसिक बेचैनी कार्य मे बाधा संभव होंगे।

कन्या- परिश्रम से सोचे कार्य में सफलता मिलेगी, संघर्ष की स्थिति अवश्य बनी ही रहेगी।

तुला- समृद्धि के साधन बनेंगे कार्य क्षमता अनुकूल, अधिकारियों से तनाव होगा।

वृश्चिक- भाग्य का सितारा साथ देगा, बिगड़े हुए कार्य बनेंगे समय का उपयोग अवश्य करे।

धनु- मानसिक क्लेश, मन अशांत रहेगा, धन हाथ से होकर जा रहे कार्य अवश्य बनेंगे।

मकर- मनोबल उत्साहवर्धक हो इष्ट मित्रों से परेशानी, किसी के धोखे से बचकर चलें।

कुंभ- दैनिक कार्यगति अनुकूल चिन्ताएं कम होगी, तटस्थता से कार्य निपटा लें।

मीन- कार्यगति अनुकूल चिन्ताएं कम होगी, सफलता के साधन अवश्य ही जुटायेंगे ध्यान रखें।

फ्लू संक्रमण और सर्दी-जुकाम में ऐसे मिलेगी राहत

हमें हमेशा से यह पता है कि हम जब छींकते हैं या खांसते हैं तब सर्दी-जुकाम का वायरस फैलता है। छींकने या खांसने से हवा में सैकड़ों कण फैल जाते हैं और हम जब सांस लेते हैं तो यही वायरस हमारे शरीर में प्रवेश कर जाता है। एक से चार दिन के भीतर पूरे शरीर में यह फैल जाता है। इसे हम कॉमन कोल्ड या अपर रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन (संक्रमण) कहते हैं। अब एक नये अध्ययन में यह सामने आया है कि बीमार व्यक्ति के मात्र सांस लेने से भी सर्दी-जुकाम फैल सकता है।



शोध में पाया गया है कि सर्दी-जुकाम से पीड़ित व्यक्ति के मात्र सांस लेने से वायु में वायरस फैल जाते है। जिससे सर्दी-जुकाम का खतरा बढ़ जाता है।

सर्दी-जुकाम एक हल्की तथा सामान्य शारीरिक गड़बड़ी है, जो आमतौर पर एक हफ्ते में खुद ही ठीक हो जाती है। लेकिन कई बार जरूरी सावधानी न बरतने के कारण यह फ्लू, ब्रोंकाइटिस, ब्रोंकोनिमोनिया आदि का रूप भी धारण कर सकती है। सर्दी-जुकाम होने के प्रमुख कारणों में वायरल इन्फेक्शन, मौसम का बदलना, ठंडी हवा का लगना, अनुपयुक्त आहार, व्यायाम का अभाव, मांसपेशियों का शिथिल पड़ना, कब्ज की शिकायत आदि प्रमुख हैं। योग के नियमित अभ्यास से इस समस्या की चपेट में आने से बचा जा सकता है।

योग शरीर और मन, दोनों को संतुलित, समन्वित तथा क्रियाशील रखता है। इसके नियमित अभ्यास से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिसके कारण सर्दी-जुकाम की समस्याओं का सामना कम करना पड़ता है। सर्दी-जुकाम से पीड़ित लोग कुछ सावधानियां बरतकर और तबियत में कुछ सुधार आने के बाद योग का अभ्यास करके जुकाम से राहत पा सकते हैं।

उपवास है बेहतर विकल्प

सर्दी-जुकाम तथा वायरल इन्फेक्शन आदि की स्थिति में यौगिक क्रियाओं का अभ्यास नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति में उपवास सबसे बेहतर विकल्प है। उपवास या आहार नियंत्रण द्वारा इस समस्या को पूरी तरह टाला जा सकता है। जैसे ही रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखें, यदि संभव हो तो दिन भर का या एक समय का भोजन त्याग दें। रोग की तीव्रता तुरंत आधी हो जाएगी। साथ में दिन भर हल्के गर्म पानी का सेवन करते रहें। अदरक, काली मिर्च, दालचीनी तथा मेथी की चाय नियमित अंतराल पर पिएं और आराम करें। केवल एक दिन उपवास, पूर्ण विश्राम तथा योगनिद्रा के अभ्यास से सर्दी-जुकाम को ठीक किया जा सकता है। स्वस्थ होने पर यदि कुछ यौगिक क्रियाओं का अभ्यास किया जाए तो रोग के बाद की कमजोरी व पीड़ा को कम तो किया ही जा सकता है, साथ में भविष्य में होने वाले किसी भी रोग की आशंका को भी टाला जा सकता है।

करें ये योगासन

जुकाम ठीक होने के बाद शुरुआत में हल्के आसन जैसे पवनमुक्तासन, वज्रासन, शशांकासन, मेरुवक्रासन, धनुरासन, भुजंगासन आदि का ही अपनी क्षमता को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करें। धीरे-धीरे जैसे शरीर की क्षमता में वृद्धि हो, अभ्यास में जानुशिरासन, सुप्त वज्रासन, ताड़ासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, त्रिकोणासन आदि को जोड़ देना चाहिए। यदि सूर्य नमस्कार का नियमित अभ्यास किया जाए तो सर्दी-जुकाम , खांसी आदि के साथ-साथ अन्य रोगों की आशंका भी कम हो जाती है।

प्राणायाम है कारगर

जुकाम, खांसी, बुखार (वायरल) के ठीक होने पर सरल कपालभाति तथा नाड़ीशोधन प्राणायाम का अभ्यास करने से कमजोरी, रोग प्रतिरोधक क्षमता, उत्साह एवं स्वास्थ्य में लाभ मिलता है। नियमित प्राणायाम करने से बंद नाक और कफ से होने वाली समस्या में भी राहत मिलती है। योगासन की शुरुआत कर रहे हैं तो विशेषज्ञ की देख-रेख में ही करें।

नाड़ीशोधन प्राणायाम की अभ्यास विधि

सिद्धासन, पद्मासन या सुखासन में रीढ़, गला व सिर को सीधा कर बैठ जाएं। दाईं नासिका को बंद कर बाईं नासिका से गहरी, धीमी व लंबी सांस अंदर लें। उसके बाद बाईं नासिका को बंद कर दाईं नासिका से लंबी-गहरी तथा धीमी सांस बाहर निकालें। इसके तुरंत बाद इसी नासिका से श्वास लेकर बाईं नासिका से प्रश्वास करें। यह नाड़ीशोधन प्राणायाम की एक आवृत्ति है। शुरुआत में 10 आवृत्तियों का अभ्यास करें। धीरे-धीरे इसकी आवृत्तियों की संख्या बढ़ा कर 24 तक कर लें।

एक रिपोर्ट के अनुसार अगर कोई भी व्यक्ति दिन में महज 21 मिनट तक व्यायाम करता है तो उसकी उम्र 3 साल तक बढ़ सकती है। ये अध्ययन 12 महीनों में 6,600 हजार लोगों पर किया गया है, जो दिन में 21 मिनट और हफ्ते में 150 मिनट का समय व्यायाम को देते हैं। वहीं, स्टडी के बाद 3 साल की जिंदगी बढ़ने की उम्मीद पाई गई। शोधकर्ताओं ने युवाओं पर रिसर्च कर पाया कि अगर रोजाना 60 से 90 मिनट तक चला जाए तो 2.4 साल से 2.7 साल तक का जीवन बढ़ सकता है।

मोटापे से इस प्रकार करें बचाव



बिजी लाइफस्टाइल में हमें अपनी सेहत पर ध्यान देने का वक्त ही नहीं मिलता। इस वजह से ज्यादातर लोग मोटापे का शिकार बन जाते हैं। मोटापा सबसे ज्यादा हमारे पेट पर नजर आता है। यह स्वास्थ्य के लिए खराब तो है ही, देखने में भी काफी बुरा कगता है।

मोटापे के बड़े कारणों में खाने-पीने की आदतों में बदलाव न कर पाना और एक्सरसाइज के लिए समय न निकाल पाना है।हमारा अस्त-व्यस्त रुटीन हमारी इस परेशानी की सबसे बड़ी वजह है।

अगर आपके पास भी समय नहीं है तो परेशान ना हों , क्योंकि आज हम आपको बता रहें कि डाइटिंग और एक्सरसाइज किए बिना आप किस तरह अपने वजन को कम कर सकते हैं। आपको बस अपनी कुछ आदतों में सुधार करने की जरूरत है।

सोने का सही तरीका

सोने का तरीका हमारी बहुत सी परेशानियों को दूर करने में मददगार होता है। सामान्य रूप से एक शख्स को सात से आठ घंटे की नींद जरूर लेनी चाहिए। आज के समय में बेहद व्यस्त दिनचर्या के चलते ज्यादातर लोग पर्याप्त नींद नहीं ले पाते हैं और ये भी मोटापे की एक प्रमुख वजह है।

सोडा पीने की जगह पानी अपनाएं

अगर आपको सोडा और दूसरे सॉफ्ट ड्रिंक पीना पसंद है तो यह आपके मोटापे की प्रमुख वजह हो सकता है। इन पेय-पदार्थों में पर्याप्त मात्रा में कैलोरी होती है जिससे वजन बढ़ना तय है। तो ऐसे में अब अगर आपको जब भी प्यास लगे तो सॉफ्ट ड्रिंक की जगह सादा पानी पिएं।

सीधे खड़े रहकर

अगर आपको अपना बढ़ा हुआ पेट अजीब नजर आने लगा है तो आज से सीधे खड़े होने की आदत डाल लीजिए। बेली फैट को कम करने के लिए यह सबसे सही पोश्चर है। यह बात कई शोधों में भी साबित हो चुकी है।

पेट अंदर करके बैठना

अगर आप बैठे हैं तो कोशिश कीजिए कि घुटनों को मोड़कर 30 सेकेंड्स के लिए सांस अंदर खींचकर बैठें। अगर आप दिन में पांच से छह बार भी ऐसा कर लेते हैं तो कुछ ही दिनों में आपको परिणाम नजर आने लग जाएंगे.

योग से मिलेगी खर्राटों की समस्या से तुरंत निजात



अगर आप अपने खर्राटों को लेकर परेशान हैं तो इसके लिए अपने रहन-सहन में आपको बदलाव करना होगा। कई बार एंटी स्नोरिंग उपकरणों व दूसरे तरीकों के इस्तेमाल से भी लोगों को मनचाहा लाभ नहीं मिला है। वहीं जीवनशैली में कुछ बदलाव कर खर्राटों की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस बदलाव को कारगर करने में योग अहम भूमिका निभा सकता है। यह सबसे आसान और मजेदार विकल्पों में से एक है। योग करने से खर्राटों की समस्या से तुरंत निजात मिल सकती है। हालांकि, दूसरे तरीकों की तरह ही अगर योग को भी दैनिक क्रिया के तौर पर जारी रखा जाएगा तो बदलाव अधिक सहज होते जाएंगे।

योग से कैसे कम होते हैं खर्राटे

योग आसनों की मदद से रक्त संचार और फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि एयर पैसेज पूरी तरह से खुला रहे। योगआसन गले और चेहरे की मांसपेशियों को मजबूत करने में भी मदद करते हैं। इन प्रभावों से खर्राटों की समस्या को कम या पूरी तरह से खत्म करने में मदद मिलती है।

पैरों को मोड़कर आराम से बैठ जाएं (पालथी मारकर)। आंखें बंद कर नाक से गहरी सांस लें। कर्कश आवाज निकालते हुए नाक से सांस लें। गर्दन की मांसपेशियों को कॉन्ट्रैक्ट करें और जब तक हो सके, सांस को रोके रहें। एक नथुने को पकड़ते हुए दूसरे से सांस छोड़ें। फिर दूसरे को पकड़ें और पहले से सांस छोड़ें। इस व्यायाम को दिन में तीन से पांच बार दोहराएं।

जमीन पर चटाई बिछाकर पालथी मारकर बैठें। रीढ़ की हड्डी व सिर बिलकुल सीधा होना चाहिए और चेहरा सामने की ओर रखें। एक गहरी सांस लें और जब तक हो सके, उसे रोक कर रखें। इस दौरान प्राण (जो ऊर्जावान सांस आपने ली है) के बारे में सोचते रहें। धीरे-धीरे सांस छोड़ें। सांस छोडने का समय सांस लेने के समय से अधिक होना चाहिए।

भ्रामरी या हमिंग बी की मुद्रा

सीधे बैठें और तर्जनी उंगलियों को कानों पर रखें। गहरी सांस अंदर लें, उसे छोड़ते समय कार्टिलेज को धीरे से दबाएं। आप चाहें तो कार्टिलेज को दबाए रखें या मधुमक्खी जैसी तेज आवाज निकालते हुए उस पर उंगली रखते व हटाते रहें। फिर से सांस लें और इस प्रक्रिया को 6-7 बार दोहराएं।

उज्जयी प्राणायाम या हिसिंग मुद्रा

सांस लेने से शुरुआत करें, गले के पीछे वाले हिस्से को खींचते हुए आपकी सांस धीमी व रिलैक्स्ड होनी चाहिए। सांस लेते समय स्थिर हिसिंग आवाज निकालें, यह ध्वनि धीमी व कान को अच्छी लगने वाली होनी चाहिए। सांस लेने व छोड़ने की प्रक्रिया को बढ़ाते रहें, ध्यान रखें कि इससे शरीर के किसी भी हिस्से में दबाव न महसूस हो। सांस की आवाज धीमी हो और टूटनी नहीं चाहिए।

सिंह गर्जनासन या रोरिंग मुद्रा

जमीन पर बैठें, पैर शरीर के अंदर मुड़े हुए और हिप्स, एड़ियों पर स्थिर होने चाहिए। जांघों को फैलाएं और हथेलियों को जमीन पर घुटनों के बीच इस तरह से रखें कि कलाइयां बाहर की ओर व उंगलियां अंदर की ओर नजर आएं। आगे की ओर झुकें, सिर को पीछे झुकाएं और गहरी सांस लें। मुंह खोलकर जीभ बाहर निकालें और सांस छोड़ें। इन चरणों को तीन बार दोहराएं।



मैनचेस्टर में महिला सुपर लीग फुटबॉल में मैनचेस्टर सिटी की निमाह चार्लेस अपना दूसरा गोल दागती हुई।

शेफाली एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक टी20 अर्धशतक लगाने वाली खिलाड़ी बनीं

मुम्बई (ए)। भारतीय महिला क्रिकेट की आक्रामक सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक साल में सबसे अधिक टी20 अर्धशतकों का विश्व रिकॉर्ड बनाया है। शेफाली ने ये रिकार्ड यहां रायपुर में खेले गये। दूसरे टी20 में अपनी 55 रनों की पारी से बनाया है। इस उपलब्धि के साथ ही उन्होंने भारत की ही स्मृति मंधाना के पिछले विश्व रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया है। इस मैच में शैफाली की पारी से भारतीय टीम ने जिम्बाब्वे द्वारा तय 103 रनों के छोटे लक्ष्य को आसानी से हासिल कर दिया। शेफाली ने केवल 25 गेंदों पर 55 रनों की



आक्रामक पारी खेली, जिसमें छह शानदार चौके और चार छक्के शामिल थे।

शेफाली ने इसी के साथ ही साल 2026 में महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में नौवां अर्धशतक लगाया। इससे पहले मंधाना ने साल 2024 में आठ अर्धशतक लगाये। इस खास सूची में संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर महान ही पूर्व कप्तान मिताली राज शामिल हैं। मिताली ने साल 2018 में सात बार यह रिकार्ड बनाया था। इसके साथ ही उनके साथ हांगकांग की नताशा माइल्स भी हैं, जिन्होंने साल 2026 में सात 50-प्लस स्कोर हासिल किये हैं। गौरतलब है कि साल 2026 शेफाली के करियर का अब तक का सबसे शानदार वर्ष रहा है। इस कैलेंडर वर्ष में उन्होंने टी20 अंतरराष्ट्रीय फॉर्मेट में कुल 922 रन बनाए हैं, जो किसी भी खिलाड़ी द्वारा एक साल में बनाए गए सबसे अधिक रनों का आंकड़ा है। इस दौरान उनका औसत लगभग 38.41 का रहा है।

40 दिन लंबा न्यूजीलैंड का दौरा, टीम इंडिया की होगी अग्निपरीक्षा

22 अक्टूबर से शुरू होगा दौरा शुरु

नई दिल्ली (ए)। भारत और वेस्टइंडीज के बीच सीरीज समाप्त होने के बाद अब टीम इंडिया के सामने न्यूजीलैंड की चुनौती है। भारतीय टीम का न्यूजीलैंड दौरा 22 अक्टूबर से शुरू होकर 1 दिसंबर तक चलेगा। लगभग 40 दिनों तक चलने वाले इस दौरे में भारतीय खिलाड़ी न्यूजीलैंड की धरती पर टेस्ट, वनडे और टी-20 सीरीज में अपना दमखम दिखाएंगे। लंबे दौरे के दौरान खिलाड़ियों को अलग-अलग प्रारूपों में अपनी क्षमता साबित करने का मौका मिलेगा।

इस दौरे को लेकर भारतीय क्रिकेट प्रशंसकों की नजरें टीम के प्रदर्शन और खिलाड़ियों के चयन पर टिकी हैं। भारतीय टीम ने वनडे सीरीज के लिए दो अलग-अलग दलों की घोषणा की है। शुरुआती तीन मुकाबलों में शुभमन गिल टीम की कप्तानी करेंगे, जबकि अंतिम दो वनडे मैचों में श्रेयस अय्यर कप्तानी की जिम्मेदारी संभालेंगे। इस बदलाव के चलते सीरीज के दौरान टीम की रणनीति और नेतृत्व में भी अंतर देखने को मिल सकता है।

इस दौरे पर भुवनेश्वर कुमार की वापसी भी चर्चा का विषय बनी हुई है। करीब चार साल बाद उनके भारतीय टीम के लिए खेलने की संभावना से प्रशंसकों में उत्साह है। अनुभवी गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की वापसी से गेंदबाजी आक्रमण को मजबूती मिलने की उम्मीद की जा रही है। वहीं, आकिब नबी को एक बार फिर मौका दिया गया है, जबकि ऋतुराज गायकवाड़ वनडे टीम में अपनी जगह बनाए रखने में सफल रहे हैं। न्यूजीलैंड की परिस्थितियां भारतीय खिलाड़ियों के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो सकती हैं। वहां की तेज गेंदबाजी के अनुकूल पिचें और मौसम बल्लेबाजों तथा गेंदबाजों, दोनों की परीक्षा ले सकते हैं। ऐसे में टीम इंडिया को बेहतर तालमेल, सही रणनीति और निरंतर प्रदर्शन पर ध्यान देना होगा।

मैदान पर दोनों टीमों के आमने-सामने आने से पहले क्रिकेट प्रशंसकों की दिलचस्पी टेस्ट, वनडे और टी-20 सीरीज के पूरे कार्यक्रम तथा तीनों प्रारूपों के लिए घोषित भारतीय टीम के खिलाड़ियों की सूची जानने में है।



यह दौरा भारतीय टीम के लिए अपनी तैयारियों और खिलाड़ियों की क्षमता परखने का महत्वपूर्ण अवसर होगा।

पूरा शेड्यूलः

भारत-न्यूजीलैंड टी20 सीरीज

भारत और न्यूजीलैंड की टी20 सीरीज 22 अक्टूबर से क्राइस्टचर्च में शुरू होगी. यह सीरीज 1 नवंबर तक चलेगी, जिसमें कुल 5 मैच खेले जाएंगे.

22 अक्टूबर - पहला टी20 (क्राइस्टचर्च)
24 अक्टूबर - दूसरा टी20 (क्राइस्टचर्च)
27 अक्टूबर - तीसरा टी20 (वेलिंगटन)
30 अक्टूबर - चौथा टी20 (ऑकलैंड)
1 नवंबर - पांचवां टी20 (हैमिल्टन)

भारत का टी20 स्क्वाडः श्रेयस अय्यर (कप्तान), वैभव सूर्यवंशी, तिलक वर्मा, अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, नमन धीर, शिवम दुबे, नीतीश कुमार रेड्डी, अक्षर पटेल, ईशान किशन, अर्शदीप सिंह, प्रिंस यादव, भुवनेश्वर कुमार, मयंक यादव, वरुण चक्रवर्ती, कुलदीप यादव।

न्यूजीलैंड का टी20 स्क्वाडः मिचेल सैंटनर (कप्तान), फिन एलन, माइकल ब्रेसवेल, डेरिल मिचेल, बेवन जैकब्स, नाथन स्मिथ, जोश क्लार्कसन, ग्लेन फिलिप्स, डेवोन कॉनवे, टिम साइफर्ट, जैकब डफी, मैट हेनरी, लॉकी फर्ग्यूसन, एडम मिलने, काइल जैमीसन, ब्लेयर टिकनर।

भारत-न्यूजीलैंड वनडे शेड्यूल

भारत और न्यूजीलैंड की वनडे सीरीज 4 नवंबर से शुरू होकर 15 नवंबर तक चलेगी.

4 नवंबर - पहला वनडे (ऑकलैंड)
7 नवंबर - दूसरा वनडे (वेलिंगटन)
10 नवंबर - तीसरा वनडे (हैमिल्टन)
13 नवंबर - चौथा वनडे (माउंट मौनगुआनी)
15 नवंबर - पांचवां वनडे (माउंट मौनगुआनी)

भारत का वनडे स्क्वाड (पहले 3 मैच):

शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, ऋतुराज गायकवाड़, नमन धीर, नीतीश कुमार रेड्डी, अक्षर पटेल, अंशुल कंबोज, केएल राहुल, ईशान किशन, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, गुरनूर बराड़, प्रसिद्ध कृष्णा।

न्यूजीलैंड का वनडे स्क्वाड (पहले 3 मैच):

मिचेल सैंटनर (कप्तान), मार्क चैपमैन, विल यंग, डेरिल मिचेल, रचिन रवींद्र, नाथन स्मिथ, माइकल ब्रेसवेल, डेवोन कॉनवे, टॉम लाथम, ग्लेन फिलिप्स, जैकब डफी, मैट हेनरी, काइल जैमीसन, ब्लेयर टिकनर।

भारत-न्यूजीलैंड टेस्ट शेड्यूल

भारत और न्यूजीलैंड के बीच 2 टेस्ट मैच खेले जाएंगे. यह सीरीज 19 नवंबर से शुरू होगी.

19 नवंबर - 23 नवंबर - पहला टेस्ट (वेलिंगटन)
27 नवंबर - 1 दिसंबर - दूसरा टेस्ट (क्राइस्टचर्च)

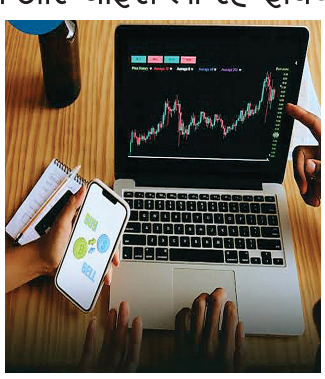
भारत का टेस्ट स्क्वाडः शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, देवदत्त पडिक्कल, साइ सुदर्शन, रवींद्र जडेजा, नीतीश कुमार रेड्डी, अंशुल कंबोज, वाशिंगटन सुंदर, केएल राहुल, ऋषभ पंत, ध्रुव जुरेल, जसप्रीत बुमराह, आकाशदीप, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव।

इस सप्ताह खुलेंगे तीन एनएफओ, मात्र 100 रुपए से करें शुरुआत

- नवी, सैमको और चॉइस ला रहे इक्विटी व हाइब्रिड

नई दिल्ली (ए)। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए अक्टूबर का यह सप्ताह नया उत्साह लेकर आया है। इस दौरान तीन नए फंड ऑफर (एनएफओ) खुल रहे हैं, जिनमें नवी, सैमको और चॉइस म्युचुअल फंड अपनी इक्विटी और हाइब्रिड योजनाएं ला रहे हैं। निवेशक मात्र 100 रुपये से इन स्कीम्स में निवेश शुरू कर सकते हैं, जो 19 और 20 अक्टूबर से उपलब्ध होंगी। ये फंड निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने का अवसर प्रदान करेंगे।

1. नवी मल्टी एसेट ओम्नी एफओएफ (19 अक्टूबर से): यह स्कीम इक्विटी, डेट और कमोडिटी जैसे विभिन्न एसेट क्लास में निवेश के माध्यम से पूंजी वृद्धि और आय



अर्जित करने का लक्ष्य रखेगी। बहुत ज्यादा जोखिम वाली यह फंड ऑफ फंड्स स्कीम ऋषभ पटेल मैनेज करेंगे, जिसमें कोई लॉक-इन या एग्जिट लोड नहीं है।

2. सैमको इक्विटी सेविंग्स फंड (19 अक्टूबर से): यह फंड शेयरों, आर्बिट्राज अवसरों और डेट व मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश के जरिए लंबी अवधि में पूंजी बढ़ाना चाहता है। कुछ ज्यादा जोखिम वाली यह लॉक-इन मुक्त स्कीम है, पर 30 दिनों के भीतर निकासी पर एक फीसदी एग्जिट लोड लगेगा।

3. चॉइस लार्ज एंड मिडकैप फंड (20 अक्टूबर से): यह ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम मुख्य रूप से लार्ज और मिड कैप शेयरों में निवेश कर लंबी अवधि में निवेशकों की पूंजी बढ़ाने पर केंद्रित है। बहुत ज्यादा जोखिम वाली इस स्कीम में 365 दिनों के भीतर निकासी पर एक फीसदी एग्जिट लोड है। निवेश से पहले निवेशकों को स्कीम की रणनीति, जुड़े जोखिमों और शुल्कों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करने की सलाह दी जाती है।

दुर्गा नवमी पर सोने और चांदी की कीमतों में तेजी

- सोने का भाव 1,48,279 प्रति 10 ग्राम, चांदी 2,12,041 रुपए प्रति किलोग्राम

नई दिल्ली (ए)। दुर्गा नवमी के शुभ अवसर पर सोमवार को भारतीय बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में तेजी दर्ज की गई। त्योहारी सीजन में बढ़ी खरीदारी की मांग ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों कमोडिटी बाजारों में बुलियन के भावों को मजबूती दी है। सप्ताह के पहले कारोबारी दिन निवेशकों का रुझान सोने-चांदी की ओर बढ़ा है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का भाव 0.24 फीसदी की बढ़त के साथ 1,48,279 प्रति 10 ग्राम पर खुला। वहीं चांदी की कीमत में 0.41 फीसदी की तेजी आई, जिसके बाद यह 2,12,041 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। पिछले कारोबारी दिन शुक्रवार को एमसीएक्स पर सोना 1,48,000 रुपए और चांदी



2,11,418 रुपए पर बंद हुए थे। अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी बाजार कॉमेक्स पर भी सोने में 0.28 फीसदी और चांदी में 0.46 फीसदी का उछाल देखा गया। विश्लेषकों के अनुसार नवरात्रि जैसे शुभ अवसरों पर गहनों और बुलियन की खरीदारी बढ़ती है, जिससे कीमतों को समर्थन मिलता है। हालांकि, पश्चिम एशिया के बदलते भू-राजनीतिक हालात अल्पकालिक दबाव डाल सकते हैं, लेकिन दीर्घकालिक रूप से सोने-चांदी में और तेजी की संभावनाएं बरकरार हैं। वहीं दिल्ली में 24 कैरेट सोने का भाव करीब 14,780 रुपए प्रति ग्राम और चांदी 2,29,900 रुपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर बना हुआ है, जिसमें अन्य शहरों में मामूली उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है।

मप्र में टीआई की जगह एसआई से थाने चलाने की व्यवस्था पर कानूनी सवाल, डीजीपी को नोटिस

हाईकोर्ट के अधिवक्ता गोपाल सिंह बघेल ने पुलिस महानिदेशक को पत्र भेजकर पारदर्शी पदस्थापना नीति की मांग की; नीति नहीं बनने पर जनहित याचिका दायर करने की चेतावनी

अचलेश्वर एक्सप्रेस

भोपाल/जबलपुर। मध्यप्रदेश में थानों के प्रभार को लेकर अपनाई जा रही व्यवस्था अब कानूनी बहस का विषय बनती नजर आ रही है। उच्च न्यायालय, जबलपुर के अधिवक्ता गोपाल सिंह बघेल ने पुलिस महानिदेशक (DGP) को पत्र भेजकर संवेदनशील थानों में थाना प्रभारी निरीक्षक (टीआई) के स्थान पर उपनिरीक्षक (एसआई) से थाना संचालित कराए जाने की व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं।

अधिवक्ता की ओर से मांग की गई है कि थाना प्रभारियों की पदस्थापना के लिए स्पष्ट, पारदर्शी और जवाबदेह नीति बनाई जाए। उनका कहना है कि संवेदनशील थानों की जिम्मेदारी सौंपने में अनुभव, प्रशासनिक आवश्यकताओं और पुलिस व्यवस्था से जुड़े



निर्धारित मानकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। पत्र में कथित तौर पर यह मांग भी उठाई गई है कि वरिष्ठ अधिकारियों की उपलब्धता और पदस्थापना संबंधी नियमों के अनुरूप थानों का प्रभार तय किया जाए, ताकि व्यवस्था में मनमानी की आशंका न रहे। यदि पुलिस मुख्यालय की ओर से इस विषय पर उचित नीति लागू नहीं की जाती है, तो अधिवक्ता ने उच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर करने की बात कही है। यह मामला केवल टीआई और एसआई के बीच पदस्थापना का नहीं, बल्कि पुलिस प्रशासन में जिम्मेदारी तय करने, कार्यप्रणाली में पारदर्शिता बनाए रखने और थानों के प्रभावी संचालन से भी जुड़ा है। हालांकि, किसी थाने में एसआई को प्रभारी बनाए जाने की वैधानिकता संबंधित नियमों, लागू आदेशों और परिस्थितियों के आधार पर तय होगी। केवल पदनाम के आधार पर प्रत्येक ऐसी पदस्थापना को नियमविरुद्ध नहीं माना जा सकता।

अब निगाहें पुलिस मुख्यालय पर

अधिवक्ता के पत्र पर पुलिस मुख्यालय की ओर से क्या रुख अपनाया जाता है, यह महत्वपूर्ण होगा। फिलहाल, इस मामले में ष्ठतक की आधिकारिक प्रतिक्रिया, पत्र पर की गई कार्रवाई और जनहित याचिका वास्तव में दायर किए जाने की स्थिति की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। यदि इस मुद्दे पर न्यायिक हस्तक्षेप होता है, तो थाना प्रभारियों की पदस्थापना और जिम्मेदारी तय करने की प्रक्रिया पर व्यापक बहस हो सकती है।

कप्तान की सख्ती के बीच जनकगंज में सट्टे के कारोबार को फिर हवा? आरक्षक रणवीर शर्मा और सुमित शर्मा की भूमिका

पूर्व में क्राइम में साथ रहे थाना प्रभारी और दोनों आरक्षकों की जनकगंज में तैनाती के बाद पुराने सट्टा कारोबार के दोबारा सक्रिय होने की चर्चा; दीपक चौरसिया और जीतू कुशवाहा के नाम



अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शहर में अपराध और अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस कप्तान की सख्ती के बीच जनकगंज थाना क्षेत्र से सट्टे के कारोबार को लेकर गंभीर सवाल सामने आ रहे हैं। स्थानीय स्तर पर लगाए जा रहे आरोपों के अनुसार, लंबे समय से बंद बताया जा रहा सट्टे का कारोबार अब दोबारा सक्रिय हो गया है। इन आरोपों के केंद्र में आरक्षक रणवीर शर्मा और सुमित शर्मा की भूमिका को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं।बताया जा रहा है कि दोनों आरक्षक पूर्व में वर्तमान थाना प्रभारी के साथ क्राइम में रह चुके हैं और अब जनकगंज क्षेत्र में भी उनकी तैनाती है। आरोप यह हैं कि थाना क्षेत्र में सट्टे के कारोबार से जुड़े लोगों की गतिविधियां फिर बढ़ी हैं तथा कथित तौर पर अवैध वसूली की शिकायतें भी सामने आ रही हैं।

दीपक चौरसिया और जीतू कुशवाहा

स्थानीय स्तर पर सट्टे के कारोबार से जुड़े बताए जा रहे दीपक चौरसिया और जीतू कुशवाहा के नाम भी चर्चा में हैं। आरोपों के मुताबिक, क्षेत्र में सट्टे की गतिविधियां खुलेआम संचालित होने की शिकायतें हैं। ऐसे में यह पता लगाना जरूरी है कि यदि कारोबार वास्तव में दोबारा शुरू हुआ है, तो इसकी जानकारी संबंधित थाना पुलिस को है या नहीं और अब तक इसे रोकने के लिए क्या कार्रवाई की गई है।

कप्तान से निष्पक्ष जांच की अपेक्षा

अब वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से अपेक्षा है कि जनकगंज क्षेत्र में सट्टे के कथित कारोबार, आरक्षक रणवीर शर्मा और सुमित शर्मा की भूमिका तथा दीपक चौरसिया और जीतू कुशवाहा से संबंधित शिकायतों की निष्पक्ष जांच कराई जाए। यदि अवैध कारोबार या वसूली के आरोप प्रमाणित होते हैं, तो संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए सवाल साफ है–यदि जनकगंज में सट्टे का कारोबार दोबारा सक्रिय हुआ है, तो इसे रोकने की जिम्मेदारी किसकी है? पुलिस कप्तान की अपराध नियंत्रण नीति का असर जमीनी स्तर पर दिखाई देना चाहिए और किसी भी शिकायत की जांच पद, पहचान या पुराने संबंधों से प्रभावित हुए बिना होनी चाहिए।

थाना प्रभारी की जवाबदेही भी तय हो

यदि पूर्व में बंद कराए गए अवैध कारोबार के दोबारा संचालन और पुलिसकर्मियों द्वारा कथित संरक्षण या वसूली की शिकायतें सही पाई जाती हैं, तो यह केवल मैदानी कर्मचारियों का मामला नहीं रहेगा। संबंधित थाना प्रभारी की जवाबदेही और निगरानी व्यवस्था की भी समीक्षा आवश्यक होगी। दूसरी ओर, केवल पुरानी साथ में तैनाती के आधार पर किसी अधिकारी या कर्मचारी को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा।

कोतवाली पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर 19 वर्षीय आरोपी को पकड़ा, किराना दुकान से 4,300 रुपये और दो चांदी के सिक्के चोरी होने की दर्ज हुई थी शिकायत

दाल बाजार में दुकानों के ताले तोड़कर चोरी करने वाला आरोपी गिरफ्तार, चांदी के सिक्के और नकदी बरामद



अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शहर के दाल बाजार में दुकानों के ताले तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम देने के मामले में कोतवाली थाना पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से दो चांदी के सिक्के और 2,000 रुपये नकद बरामद किए हैं। पुलिस के अनुसार, आरोपी ने पूछताछ के दौरान चोरी की वारदात करना स्वीकार किया है, जबकि शेष रकम खर्च करना बताया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार, फरियादी अंकित गर्ग निवासी दाल बाजार ने शिकायत दर्ज कराई थी कि 14 अक्टूबर की रात करीब 9 बजे वह अपनी किराना दुकान पर ताला लगाकर घर चला गया था। अगले दिन सुबह दुकान पर पहुंचने पर दोनों गेट खिंचे हुए मिले और गल्ले में रखे करीब 4,300 रुपये तथा दो चांदी के सिक्के गायब थे। इसी दौरान पड़ोस में स्थित श्रीनाथ ट्रेडर्स के काउंटर की दराज तोड़कर उसमें रखे करीब 150 से 200 रुपये भी चोरी किए जाने की जानकारी सामने आई। पास ही कौशल हविलानी के गोदाम का ताला भी टूटा मिला। शिकायत के आधार पर थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 140/26 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 305(ए) और 331(4) में प्रकरण दर्ज कर विवेचना शुरू की गई।

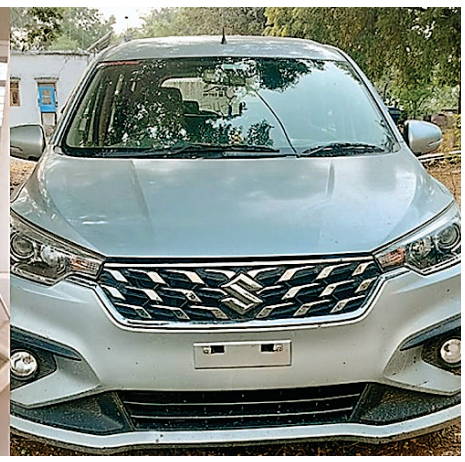
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह के निर्देश पर चोरी और नकबजनी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए कार्रवाई की जा रही है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुमन गुर्जर के निर्देशन तथा सीएसपी लश्कर किरण अहिरवार के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक विनोद विनायक करकरे ने पुलिस टीम को आरोपी की तलाश में लगाया।

विवेचना के दौरान 17 अक्टूबर को मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने माढ़रे की माता आयुर्वेदिक कॉलेज की टंकी के पास से एक संदेही को पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना नाम शिवम उर्फ कालिया, उम्र 19 वर्ष, निवासी कैंसर पहाड़िया गड्ढा, हाल निवासी ग्वालियर बताया। पुलिस के अनुसार, पूछताछ में उसने चोरी की वारदात स्वीकार की। इसके बाद उसके कब्जे से दो चांदी के सिक्के और 2,000 रुपये नकद जब्त कर उसे प्रकरण में गिरफ्तार कर लिया गया। इनकी रही सराहनीय भूमिकाः कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक विनोद विनायक करकरे, उपनिरीक्षक हरदा नायक, प्रधान आरक्षक बलिराम तथा आरक्षक संतोष पाठक, जयदेव सिंह, तारा सिंह तोमर, राजेन्द्र रावत, राजेश मण्डेलिया और धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया की सराहनीय भूमिका रही।

बिना नंबर की अर्टिगा कार से शिवपुरी से ग्वालियर की ओर आ रहे थे आरोपी, पुलिस टीम ने पीछा कर ग्राम ठेर के पास पकड़ा

मोहना पुलिस की कार्रवाई: 5 लाख की स्मैक के साथ तीन आरोपी गिरफ्तार, 15 लाख का मशरूका जब्त





अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। जिले में अवैध मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त पर अंकुश लगाने के लिए ग्वालियर पुलिस द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में थाना मोहना पुलिस ने प्रभावी कार्रवाई करते हुए बिना नंबर की अर्टिगा कार में सवार तीन आरोपियों को पकड़कर उनके कब्जे से 50 ग्राम स्मैक बरामद की है। जब्त स्मैक की कीमत करीब 5 लाख रुपये बताई गई है। पुलिस ने तस्करी में इस्तेमाल की जा रही अर्टिगा कार भी जब्त की है। कुल जब्त मशरूका की कीमत लगभग 15 लाख रुपये आंकी गई है।

पुलिस के अनुसार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह के निर्देश पर जिले में मादक पदार्थों की अवैध खरीद-फरोख्त करने वालों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है। इसी दौरान 16 अक्टूबर को थाना मोहना पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि स्लेटी रंग की बिना नंबर की अर्टिगा कार में सवार कुछ व्यक्ति स्मैक लेकर शिवपुरी से ग्वालियर की ओर आ रहे हैं। सूचना से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण जयराज कुबेर के निर्देश पर एसडीओपी घाटीगांव शैलेन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी मोहना निरीक्षक विनय सिंह तोमर ने पुलिस टीम को कार्रवाई के लिए रवाना किया।

पुलिस टीम ने एनएच-46 स्थित श्योपुर तिराहे के पास निगरानी शुरू की। इसी दौरान शिवपुरी की ओर से संदिग्ध अर्टिगा कार आती दिखाई दी। पुलिस ने कार को रोकने का प्रयास किया, लेकिन चालक वाहन को पोहरी की तरफ लेकर भागने लगा। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए पीछा किया और भागा रेलवे ब्रिज के पास ग्राम ठेर में कार को रोककर उसमें सवार तीन व्यक्तियों को पकड़ लिया।

पुलिस के मुताबिक, पकड़े गए व्यक्तियों की पहचान नरोत्तम बघेल (27), जीतू उर्फ जितेन्द्र धाकड़ (24) और नेतराज धाकड़ (29), निवासी ग्राम खांदी, थाना सुभाषपुरा, जिला शिवपुरी के रूप में हुई। तलाशी के दौरान जीतू उर्फ जितेन्द्र धाकड़ की पैंट की जेब से सफेद पारदर्शी पॉलिथीन में रखा 50 ग्राम स्मैक बरामद हुआ। इसकी अनुमानित कीमत करीब 5 लाख रुपये बताई गई है।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से स्मैक और बिना नंबर की अर्टिगा कार विधिवत जब्त कर तीनों के खिलाफ थाना मोहना में एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21 के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस अब मादक पदार्थ के स्रोत, उसकी खरीद-फरोख्त और इस नेटवर्क से जुड़े अन्य संभावित लोगों के संबंध में पूछताछ कर रही है।

इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक विनय सिंह तोमर, उपनिरीक्षक सरनाम सिंह परमार सहित थाना मोहना के पुलिसकर्मियों तथा साइबर सेल के आरक्षक आशीष शर्मा की सराहनीय भूमिका रही। मुखबिर की सूचना पर त्वरित कार्रवाई, संदिग्ध वाहन का पीछा कर आरोपियों को पकड़ना और मादक पदार्थ की बरामदगी पुलिस की सक्रियता को दर्शाती है। अवैध नशे के कारोबार पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए ऐसी कार्रवाई महत्वपूर्ण है।

आंतरी में बिना नंबर की क्रेटा कार से 10 पेटी अवैध शराब जब्त, तीन आरोपी फरार

कार की डिग्गी में मिलीं देशी प्लेन शराब की 500 क्वार्टर बोतलें, करीब 40 हजार रुपये की शराब बरामद; पुलिस ने कार और नंबर प्लेट भी की जब्त

ग्वालियर। जिले में अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत आंतरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बिना नंबर प्लेट की काले रंग की क्रेटा कार से देशी प्लेन शराब की 10 पेटियां जब्त की हैं। जब्त शराब की अनुमानित कीमत करीब 40 हजार रुपये बताई गई है। पुलिस को देखकर कार में सवार तीन व्यक्ति मौके से फरार हो गए, जिनकी तलाश की जा रही है।

पुलिस के अनुसार, 17 अक्टूबर को मुखबिर से सूचना मिली थी कि जौरासी तिराहे से आंतरी की ओर आ रही एक काले रंग की क्रेटा कार में अवैध शराब ले जाई जा रही है। कार पर आगे और पीछे नंबर प्लेट नहीं लगी थी। सूचना से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराने के बाद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण जयराज कुबेर के निर्देश पर पुलिस टीम ने वाहनों की चेकिंग शुरू की। एसडीओपी डबरा सौरभ कुमार के मार्गदर्शन और थाना प्रभारी आंतरी निरीक्षक गीतेश शर्मा के नेतृत्व में पुलिस ने संदिग्ध कार को रोकने का प्रयास किया। पुलिस के मुताबिक, कार में सवार तीन व्यक्ति वाहन को सड़क पर छोड़कर पास की गली की ओर भाग निकले। पुलिस ने उनका पीछा किया, लेकिन वे पकड़ में नहीं आ सके। इसके बाद पुलिस कार को थाने लेकर आई और तलाशी ली। कार की पिछली डिग्गी में देशी प्लेन शराब की 10 पेटियां मिलीं। प्रत्येक पेटी में 50 क्वार्टर होने के हिसाब से कुल 500 क्वार्टर शराब बरामद हुई। तलाशी के दौरान डिग्गी में पेटियों के नीचे कार की दो नंबर प्लेट भी मिलीं, जिन पर एमपी07-एएच-5314 अंकित था। पुलिस को आशंका है कि नंबर प्लेट हटाकर कार का इस्तेमाल अवैध शराब के परिवहन में किया जा रहा था। पुलिस ने शराब, दोनों नंबर प्लेट और काले रंग की क्रेटा कार को जब्त कर लिया है। मामले में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ



अपराध क्रमांक 140/26 के तहत आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) में प्रकरण दर्ज किया गया है। फरार आरोपियों की पहचान और गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। कार्रवाई में थाना प्रभारी आंतरी निरीक्षक गीतेश शर्मा, प्रधान आरक्षक संजीव निगम, प्रधान आरक्षक आरिफ मोहम्मद, आरक्षक सत्यपाल और सैनिक देवेंद्र की भूमिका रही।

ग्वालियर में अवैध शराब के खिलाफ आबकारी विभाग का बड़ा अभियान, 11 प्रकरण दर्ज

सिकंदर कंपू से डबरा तक दबिश, रुपए 1.35 लाख की मदिरा जब्त; 1,100 किलो गुड़ लाहन नष्ट

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। जिले में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री, भंडारण और परिवहन पर अंकुश लगाने के लिए आबकारी विभाग ने विशेष अभियान चलाते हुए विभिन्न क्षेत्रों में कार्रवाई की। सिकंदर कंपू, कंपू, हजीरा, बिरला नगर कॉलोनी, चक केशवपुर और डबरा क्षेत्र में दबिश के दौरान कुल 11 प्रकरण दर्ज किए गए। विभाग के अनुसार, जब्त सामग्री की अनुमानित कीमत करीब 1 लाख 35 हजार रुपये है।

कलेक्टर रुचिका चौहान एवं संभागीय आबकारी उपायुक्त संदीप शर्मा के आदेश तथा सहायक आबकारी आयुक्त राज नारायण सोनी के निर्देशन में की गई कार्रवाई के दौरान सिकंदर कंपू क्षेत्र के तिलक नगर में बेटी बचाओ चौराहे के पास एक रिहायशी मकान से 12 बल्क लीटर अंग्रेजी शराब जब्त की गई। वहीं, कंपू क्षेत्र में पानी की टंकी के पीछे से दो अलग-अलग मामलों में 13 और 11 पाव देसी शराब प्लेन बरामद की गई।



फाइल फोटो

बिरला नगर की सब्जी मंडी क्षेत्र में 25 पाव देसी शराब प्लेन जब्त की गई। इसी क्षेत्र की बालाजी डेयरी से 15 पाव देसी शराब प्लेन और पांच लीटर बीयर बरामद की गई। चक केशवपुर गांव में एक मकान से 14 पाव देसी शराब मसाला जब्त की गई। संबंधित मामलों में मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम, 1915 की धारा 34(1) के तहत प्रकरण दर्ज कर नियमानुसार कार्रवाई की गई।

डबरा में मिला 1,100 किलो गुड़ लाहन

अवैध शराब निर्माण के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए डबरा क्षेत्र के गुंजार कंजर डेरा में आबकारी टीम ने दबिश दी। यहां तीन ड्रमों में करीब 1,100 किलोग्राम गुड़ लाहन बरामद हुआ। मौके पर नमूना लेने के बाद शेष गुड़ लाहन को नष्ट कर दिया गया। इसके अलावा 22 पाव देसी शराब प्लेन भी जब्त की गई। इस मामले में आबकारी अधिनियम की धारा 5 एवं 34(1) के तहत प्रकरण दर्ज किए गए।

आबकारी विभाग के अनुसार, जब्त मदिरा के नमूने लेकर भौतिक परीक्षण और ईएएल स्कैन की प्रक्रिया भी पूरी की गई। पूरी कार्रवाई आबकारी नियंत्रण कक्ष प्रभारी एवं सहायक जिला आबकारी अधिकारी राजेश तिवारी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। अभियान में उपनिरीक्षक हरेंद्र मावई, शिवा रघुवंशी, सतेंद्र मीणा, सुरेश पाराशर सहित विभाग के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका रही।

आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री, संग्रहण और परिवहन के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा। अब देखना होगा कि इन कार्रवाइयों से अवैध शराब के कारोबार पर कितनी प्रभावी रोक लगती है और ऐसे मामलों में निगरानी कितनी मजबूत होती है।

स्वामित्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक पूनम विश्वकर्मा एवं संपादक आकाश कुशवाह के लिए विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, ग्राम पादरी, तहसील वैढ़न, जिला सिंगरौली, मध्यप्रदेश से मुद्रित व कुशवाह मोहल्ला, ग्राम पंचायत सोजना, पोस्ट-तिघरा, ग्वालियर, मध्यप्रदेश - 474001 से प्रकाशित मोबाइल नं. 84355 00216 संपादक- आकाश कुशवाह (सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)